राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष- 10, अंक- 303 पृष्ठ - 08, नई दिल्ली, शनिवार ,08 मई 2021, मूल्य रु. 1.50

केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट से लगा झटका

नई दिल्ली, (एजेंसी)। ऑक्सीजन सप्लाई के मुद्दे पर कर्नाटक हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ जाने वाली केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें उसने कर्नाटक हाईकोर्ट के 1200 एमटी ऑक्सीजन देने के आदेश खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केंद्र को राज्य के लिए 1200 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आपूर्ति करने का कर्नाटक उच्च न्यायालय का आदेश अच्छी तरह से जांचने के बाद और शक्ति के विवेकपूर्ण प्रयोग के तहत दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को अपने आदेश में कहा कि हम कर्नाटक हाईकोर्ट के आदेश में दखल नहीं देंगे, क्योंकि हाईकोर्ट ने कैलिब्रेटेड अभ्यास किया है और हमें इसमें दखल देने का कोई कारण भी नहीं दिखता। जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि कोरोना के 3.95 लाख मामलों पर कर्नाटक के मुताबिक 1700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की जरूरत है। 1100 मीट्रिक टन ऑक्सीजन कर्नाटक की न्यूनतम आवश्यकता है। बता दें कि बीते दिनों कर्नाटक हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कोविड-19 मरीजों के इलाज के लिए राज्य में तरल चिकित्सकीय ऑक्सीजन (एलएमओ) की रोजाना आपूर्ति 965 मीट्रिक टन से बढ़ाकर 1200 मीट्रिक टन करने के निर्देश दिए थे। इसके बाद गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में इस मामेल की सुनवाई हुई और न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति एम आर शाह की पीठ के समक्ष सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि राज्य को इस समय 965 मीट्रिक टन एलएमओ की आपूर्ति की जा रही है और उस आदेश पर तुरंत रोक लगाने की जरूरत है। इसके बाद पीठ ने कहा कि इस मामले में कोई भी आदेश पारित करने से पहले वह दस्तावेजों को देखेगी। वहीं दिल्ली में ऑक्सीजन संकट पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नसीहत देते हुए कहा है कि आप हमें कड़े फैसले के लिए मजबूर न करें। दिल्ली को प्रतिदिन 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की सप्लाई को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने यह बात कही है। दिल्ली सरकार की ओर से अदालत में कहा गया था कि उसके आदेश के बाद भी हर दिन 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की सप्लाई सुनिश्चित नहीं हो पा रही। शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार को आदेश दिया है कि उसे हर दिन दिल्ली को 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की सप्लाई सुनिश्चित करनी होगी। कोर्ट ने कहा कि उसे यह सप्लाई तब तक जारी रखनी होगी, जब तक कि आदेश की समीक्षा नहीं की जाती है या कोई बदलाव नहीं होता।

एयर एंबुलेंस का टूट गया था पहिया, मुंबई एयरपोर्ट पर हुई इमरजेंसी लैंडिंग

मुंबई, (एजेंसी)। हाल ही में मुंबई एयरपोर्ट पर एक एयर एंबुलेंस की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। मुंबई हवाई अड्डे पर आपातकालीन लैंडिंग करने के अगले दिन से ही उक्त विमान का लैंडिंग करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। वायरल वीडियो की अवधि 2 मिनट की है। जेट सर्व एयर एम्बुलेंस दो क्रू मेंबर्स, एक मरीज और उनके एक रिश्तेदार को ले जा रही थी। इनके अलावा उनके साथ एक डॉक्टर भी था। लेकिन तकनीकी खराबी की वजह से रात 9 बजकर 9 मिनट पर मुंबई एयरपोर्ट पर एक एयर एंबुलेंस की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में देखा जा सकता है कि लैंड करते समय विमान में से किस तरह चिंगारी निकल रही है और तेज आवाजें आ रही हैं। लेकिन एयरपोर्ट अथॉरिटी ने अपनी कोशिशों से रनवे पर विमान को आग पकड़ने से रोक लिया। वीडियो में इमरजेंसी टीम जैसे- आग, बचाव और मेडिकल स्टाफ को यात्रियों और क्रू मेंबर को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए काम करते देखा जा सकता है। बताया गया है कि जेट सर्व एविएशन सी-90 विमान नागपुर से एम्बुलेंस उड़ान के रूप में काम कर रहा था। विमान ने जैसे ही नागपुर से उड़ान भरी तो उसका एक पहिया अलग हो गया और जमीन पर गिर गया, जिससे मजबूर होकर पायलट को मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आपात लैंडिंग करानी पड़ी। राहत की बात यह है कि विमान से सभी यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया। विमान की सफल एमरजेंसी लैंडिंग की सिविल एविएशन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने प्रशंसा की है।

जिंदा है अंडरवर्ल्ड डॉन छोटा राजन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। अंडरवर्ल्ड डॉन छोटा राजन की कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते मौत की रिपोर्ट गलत निकली है। एम्स के एक अधिकारी ने उसके जिंदा होने की पुष्टि की है। छोटा राजन को पिछले दिनों कोविड संक्रमण से इलाज के लिए एम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया था। छोटा राजन को तिहाड़ जेल में बंद रहने के दौरान कोरोना हो गया था। अप्रैल के आखिरी सप्ताह में उसकी रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद उसे अस्पताल में एडमिट कराया गया था। कई दिनों तक उसकी हालत स्थिर बनी हुई थी, लेकिन शुक्रवार को उसने दम तोड़ दिया। छोटा राजन पर अपहरण और हत्या के कई मामलों समेत 70 से अधिक केस दर्ज थे। उसे मुंबई के सीनियर पत्रकार ज्योतिर्मय डे की हत्या में दोषी करार देते हुए आजीवन कैद की सजा सुनाई गई थी। हालांकि पिछले दिनों उसे हनीफ कड़ावाला की हत्या के केस में विशेष सीबीआई कोर्ट ने बरी कर दिया था।

कोरोना संकट पर सिस्टम नहीं, मोदी सरकार हुई फेल : सोनिया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। देश की मौजूदा कोविड -19 महामारी की स्थिति के बीच, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने शुक्रवार को कहा कि प्रणाली विफल नहीं हुई है क्योंकि भारत के पास कई ताकत और संसाधन हैं। सोनिया गांधी ने वर्चुअल कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में कहा कि मोदी सरकार उन संसाधनों को रचनात्मक रूप से प्रसारित करने में विफल रही है। चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में हाल ही में आए चुनावों के परिणामों पर सोनिया गांधी ने कहा कि कांग्रेस कार्य समिति चुनाव परिणाम का विश्लेषण करेगी। मनमोहन सिंह, राहुल गांधी द्वारा पीएम नरेंद्र मोदी को लिखे गए पत्रों का जिक्र करते हुए, पार्टी अध्यक्ष ने कहा कि ऐसा लगता है कि ये सभी उपयोगी पहल बहरे कानों पर गिरी हैं क्योंकि सरकार ने उन पर कोई सार्थक प्रतिक्रिया नहीं दी है। वो कहती हैं, यह सरकार बनाम हम की लड़ाई नहीं है, बल्कि हम बनाम कोरोना के बीच की लड़ाई है, सोनिया ने कहा कि कांग्रेस स्थायी समितियों की बैठकों की मांग करती है। इस संकट से निपटने में सक्षम, शांत और दूरदर्शी नेतृत्व की आवश्यकता होती है। मोदी सरकार की उदासीनता और अक्षमता के कारण राष्ट्र डूब रहा है। सोनिया गांधी ने कहा कि यह हमारे लिए खुद को इकट्ठा करने और अपने लोगों की सेवा में फिर से समर्पित करने का समय है। सोनिया ने सरकार की त्रुटिपूर्ण वैक्सीन नीति के लिए शासन के बारे में कहा कि बजट 2021 में सभी के लिए निः शुल्क टीके के लिए 35,000 करोड़ रुपये आवंटित करने के बावजूद, मोदी सरकार ने तीसरे चरण में टीकों की खरीद के लिए राज्य सरकारों को भारी दबाव में रखा। सोनिया ने कहा, मोदी सरकार की असमान टीकाकरण नीति लाखों दलितों, आदिवासियों, अन्य पिछड़े वर्गों, के साथ-साथ गरीबों और हाशिए पर रहने वालों को बाहर कर देगी।

कोरोना से लड़ो, पीएम मोदी से नहीं... झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर बरसे डॉ. हर्षवर्धन

नई दिल्ली। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के उस ट्वीट पर वाकयुद्ध शुरू हो गया, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर टेलीफोन बातचीत के दौरान केवल मन की बात करने का आरोप लगाया था। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने शुक्रवार को कहा कि मुख्यमंत्री को कोरोना के खिलाफ लड़ाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ नहीं।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्या मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा, हेमंत सोरेन जी, शायद अपने पद की गरिमा को भूल गए हैं। कोरोना से उत्पन्न स्थिति को लेकर देश के पीएम पर कोई बयान देते समय उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस महामारी का अंत सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। अपनी नाकामी छिपाने के लिए अपने मन की भड़ास पीएम पर निकालना निंदनीय है।

उन्होंने आगे कहा, केंद्र सरकार ने कोरोना संकट काल में जहां ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के लिए खज़ाने खोल दिए हैं, वहीं झारखंड सरकार ने, अपने खज़ाने का मुंह बंद कर रखा है। हेमंत सोरेन जी चाहते हैं कि हर काम केंद्र सरकार करे। कोरोना से लड़िए, पीएम से नहीं!

शिवसेना नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि नाराजगी गलत है। यह इंगित करने में कुछ भी गलत नहीं है कि महामारी पर विनम्र बात करने का समय खत्म हो गया है और पीएम मोदी से टीकों और दवाओं के बारे में निर्णायक कार्रवाई पर बात करने की उम्मीद है।

आपको बता दें कि गुरुवार रात पीएम मोदी ने हेमंत सोरेन से राज्य की कोविड-19 स्थिति के बारे में बात की। बातचीत के बाद, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने ट्वीट कहा कि पीएम मोदी ने बातचीत के दौरान केवल मन की बात की। मुख्यमंत्री ने ट्वीट किया, बेहतर होता कि वे महत्वपूर्ण मामलों पर सुनते और बोलते।

सोरेन पर सीएम पद की गरिमा का अपमान करने का आरोप लगाते हुए असम बीजेपी नेता हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि ट्वीट से राज्य की पीड़ा का मजाक उड़ाया गया है, जिसके बारे में पीएम चिंतित हैं और उन्होंने स्थिति की जानकारी लेने के लिए फोन किया गया था।

असम के मुख्यमंत्री सरबानंद सोनोवाल ने सोरेन के ट्वीट को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया और कहा कि हेमत सोरेन का ट्वीट दुर्भाग्यपूर्ण है।वह केवल इस मामले पर राजनीति करना चा रहे हैं। पीएम मोदी का हर प्रयास और कार्य केवल जनता और राष्ट्र के लिए है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने नई दिल्ली में आरएमएल अस्पताल में स्थापित नव स्थापित ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र का निरीक्षण करते हुए।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, देश के 17 राज्यों में 50 हजार से भी कम कोरोना के सक्रिय मामले

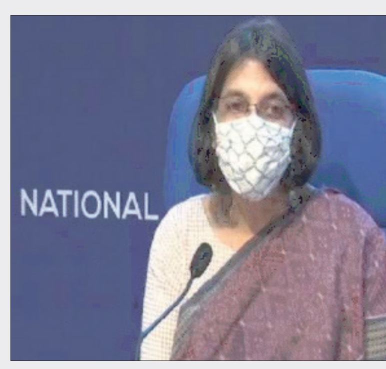

नई दिल्ली । देश में बढ़ते कोरोना के नए मामलों को लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्यवार कोरोना की स्थिति बताई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव आरती आहूजा ने बताया कि देश में 12 राज्य ऐसे हैं जहां एक लाख से भी ज्यादा सक्रिय मामले हैं। 7 राज्यों में 50,000 से 1 लाख के बीच सक्रिय मामलों की संख्या बनी हुई है। 17 राज्य ऐसे हैं जहां 50,000 से भी कम कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, हरियाणा और बिहार में कोरोना के सबसे ज्यादा नए मामले सामने आ रहे हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव ने बताया कि देश में 24 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश ऐसे हैं जहां 15 फीसद से ज्यादा पॉजिटिविटी रेट है। 5 से 15 फीसद पॉजिटिविटी रेट 9 राज्यों में है। 5 फीसद से कम पॉजिटिविटी रेट 3 राज्यों में है।

कोरोना के टीकाकरण की जानकारी देते हुए मंत्रालय ने कहा कि 18 से 44 वर्ष के आयु के बीच 11.81 लाख लोगों को वैक्सीन की पहली खुराक दी गई है। अब तक सभी श्रेणियों में कुल 16.50 करोड़ खुराकें दी जा चुकी हैं।

इन राज्यों में कम हो रहे कोरोना के नए मामले- इसके साथ ही उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और झारखंड और केंद्रशासित प्रदेश हैं जहाँ पहले मामले बढ़ रहे थे, लेकिन अब धीरे-धीरे कोरोना के नए मामले कम हो रहे हैं।

केंद्रीय अतिरिक्त स्वास्थ्य सचिव के अनुसार कोरोना के रोजाना बढ़ते नए मामलों वाले राज्य पंजाब, जम्मू और कश्मीर, असम, हिमाचल प्रदेश, पुडुचेरी, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड हैं।

देश के इन राज्यों में कोरोना के नए मामलों में हो रही बढ़ोतरी

कोरोना के बढ़ते नए मामलों वाले राज्यों के बारे में स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, हरियाणा, ओडिशा और उत्तराखंड ऐसे राज्य हैं जहां पर कोरोना के नए मामलों में रोजोना बढ़ोतरी देखी जा रही है।

एक नज़र...

स्टालिन ने ली सीएम पद की शपथ

नई दिल्ली, (एजेंसी)। डीएमके प्रमुख एमके स्टालिन ने शुक्रवार सुबह तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने उन्हें शपथ दिलाई। दो मई को आए नतीजों में डीएमके ने तमिलनाडु विधानसभा की कुल 234 सीटों में से 133 पर जीत हासिल कर बहुमत हासिल किया था। चुनाव आयोग के फाइनल नतीजों के अनुसार, के पलानीस्वामी के नेतृत्व वाली एआईएडीएमके को सिर्फ 66 सीटें ही मिल सकीं हैं। इससे पहले पलानीस्वामी ने अपना और अपने मंत्रिमंडल का त्यागपत्र सोमवार को राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित को सौंप दिया था, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया था।

सेना ने संभाली कमान

नई दिल्ली। भारतीय सेना ने कोरोना वायरस संक्रमण के बढ़ते मामलों से निपटने में नागरिक प्रशासन के अधिकारियों की मदद करने में बेहतर समन्वय के लिए एक कोविड प्रबंधन प्रकोष्ठ स्थापित किया है। अधिकारियों ने बताया प्रकोष्ठ का दायित्व राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों से मदद का आह्वान किए जाने पर उन्हें तुरंत मदद पहुंचाना है। सेना विभिन्न राज्यों में नागरिक प्रशासन के अधिकारियों की मदद के लिए पहले ही अपने महत्वपूर्ण चिकित्सा संसाधन तैनात कर चुकी है।

तिहाड़ में बंद कैदियों को रिहा करने की सोच रहा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली की सबसे बड़ी तिहाड़ जेल में 190 कैदियों के कोरोना संक्रमित होने और दो कैदियों की कोरोना से मौत होने की खबर के बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। जेलों में कोरोना के संक्रमण मिलने की खबर के बाद सुप्रीम कोर्ट कैदियों को जमानत पर रिहा करने पर विचार कर रहा है। कोर्ट ने कहा है की इस पर आदेश जल्द पारित किया जाएगा। पिछली बार भी कुछ खास कैटेगरी के कैदियों को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत पर रिहा किया था। शुक्रवार को हुई सुनवाई में सीजेआई एन वी रमना ने कहा की मौजूदा हालात बहुत खतरनाक हैं।कोरोना की दूसरी लहर पिछली बार से भी ज्यादा परेशान करने वाली है।

कार्टून

यूनान में विरोध प्रदर्शन के दौरान संगीतज्ञ अपने साजो सामान बजाते हुए।

जानलेवा हमले में मालदीव संसद के स्पीकर मो. नशीद गंभीर रूप से घायल, आईएस ने ली जिम्मेदारी

माले, (एजेंसी)। भारत के दोस्त कहे जाने वाले मालदीव की संसद के मौजूदा अध्यक्ष मोहम्मद नशीद गुरुवार को अपने घर के निकट हुए एक बम धमाके में गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डॉक्टरों का कहना है कि मोहम्मद नशीद के सभी जरूरी अंग ठीक से काम कर रहे हैं।

इस विस्फोट में 5 अन्य लोग घायल हुए हैं। इस बीच कुख्यात आतंकी संगठन इस्लामकि स्टेट (आईएस) ने बम विस्फोट की जिम्मेदारी ली है। मालदीव के राष्ट्रपति इब्राहिम सोलिह ने ऐलान किया है कि इस आतंकी हमले की जांच के लिए ऑस्ट्रेलिया की पुलिस से मदद ली जाएगी। राष्ट्रपति ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया की फेडरल पुलिस के विशेषज्ञ शनिवार को पहुंच जाएंगे और जांच में मदद करेंगे। उन्होंने कहा कि यह हमला नशीद पर नहीं बल्कि देश के लोकतंत्र और अर्थव्यवस्था पर किया गया है।

बताया जा रहा है कि इस धमाके में मोहम्मद नशीद को ज्यादा चोट नहीं आई है। इस बीच स्थानीय मीडिया के मुताबिक आतंकी संगठन आईएसआईएस ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। मोहम्मद नशीद ने कुछ समय पहले भारत दौरे के दौरान देश में इस्लामिक स्टेट के बढ़ते प्रभाव को लेकर गहरी चिंता जताई थी। मालदीव के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित पहले राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद पर हमले की स्थानीय पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

इसके साथ ही उसने लोगों से राजधानी माले में धमाके वाले क्षेत्र में जाने से परहेज करने का अनुरोध किया है। मालदीव के गृहमंत्री इमरान अब्दुल्ला ने स्थानीय टीवी चैनल को बताया को नशीद को जानलेवा चोट नहीं आई है। नशीद (53) तीस साल के एकतंत्र शासन के बाद पहली बार लोकतांत्रिक रूप से राष्ट्रपति चुने गए थे।

वह सन 2008 से 2012 तक मालदीव के राष्ट्रपति थे। इसके बाद हुए राष्ट्रपति चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था और जेल की सजा मिलने के बाद उन्हें 2018 तक चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया गया था। उनकी पार्टी के साथी इब्राहिम सोलिह को 2018 के राष्ट्रपति चुनाव में जीत मिली थी। नशीद को 2019 में संसद का अध्यक्ष चुना गया और वह देश के प्रभावशाली राजनीतिक व्यक्ति बने रहे। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मालदीव की संसद के अध्यक्ष मोहम्मद नशीद पर हुए हमले को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की और कहा कि वह जानते हैं कि नशीद कभी नहीं डरेंगे।

मालदीव में सत्तारूढ़ दल मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) ने कहा कि देश के पूर्व राष्ट्रपति नशीद के घर के बाहर हुए विस्फोट के पीछे की मंशा उनकी जान लेने की थी। फिलहाल लंदन की आधिकारिक यात्रा पर पहुंचे जयशंकर ने ट्वीट किया स्पीकर मोहम्मद नशीद पर हुए हमले को लेकर चिंतित हूं। उनके जल्द ठीक होने की कामना करता हूं। जानता हूं कि वह कभी नहीं डरेंगे। एमडीपी के अध्यक्ष हुसैन लतीफ ने कहा कि उनकी पार्टी का मानना है कि यह स्पीकर नशीद को जान से मारने के लिए किया गया आतंकवादी हमला था। सन ऑनलाइन की खबर अनुसार उनको कितनी चोट लगी, फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है।

अमेरिकी डिप्लोमैट ने कहा- भारत ने विश्व को बहुत कुछ दिया

वॉशिंगटन, (एजेंसी)। अमेरिकी टॉप डिप्लोमैट में से एक निशा देसाई बिस्वाल ने कहा है कि महामारी के इस मुश्किल दौर में दुनिया को भारत की हर मुमकिन मदद करनी चाहिए। निशा ने कहा- हमें यह ध्यान रखना जरूरी है कि अगर भारत मुश्किल में होगा तो दुनिया पर भी गहरी परेशानी आ जाएगी। भारत हर मायने में दुनिया के लिए बेहद अहम देश है। वो एक बड़ी इकोनॉमी के साथ ही वर्ल्ड फार्मास्युटिकल और वैक्सीन का हब यानी केंद्र है। उसने मानवता के लिए हर बार अहम योगदान दिया है।

भारतीय मूल की निशा 2017 तक साउथ एशिया की स्पेशल सेक्रेटरी थीं। इसके अलावा भी उन्होंने अलग-अलग सरकारों में बेहद अहम पदों पर सेवाएं दी हैं। फिलहाल, वे यूएस-इंडिया बिजनेस काउंसिल की प्रेसिडेंट हैं। न्यूज एजेंसी को दिए इंटरव्यू में निशा ने कहा, भारत में जिस तेजी से महामारी फैली, उससे पूरा देश परेशान हो गया। कार्पोरेट सेक्टर ने फौरन मदद का फैसला किया। अमेरिकी कंपनियों ने सबसे पहले यह महसूस किया कि हालात बेहद तेजी से बिगड़ रहे हैं। भारत में इन कंपनियों के कर्मचारियों ने टॉप मैनेजमेंट तक यह बातें पहुंचाईं। इसके बाद हमने एकजुट होकर भारत की मदद का फैसला किया।

नेपाल में बेकाबू हुआ कोरोना, स्थिति नहीं संभली तो भारत से भी भयावह हो जाएंगे हालात : विशेषज्ञ

काठमांडू। कोरोना संकट से जूझ रहे भारत के पड़ोसी देश नेपाल में भी स्थिति बेकाबू होती जा रही है। नेपाल में कोरोना के मामलों में बहुत तेज वृद्धि हो रही है। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यदि नेपाल में कोरोना पर जल्दी ही प्रभावी नियंत्रण नहीं लगाए गए तो वह अगले दिनों में भारत को भी पीछे छोड़ देगा।

नेपाल में हॉस्पिटल पूरी तरह भर गए हैं और देश के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली दुनिया से मदद की गुहार लगा रहे हैं। नेपाल में इस समय एक लाख लोगों पर कोरोना के 20 मामले सामने आ रहे हैं। करीब दो सप्ताह पहले भारत की भी यही स्थिति थी। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले सप्ताहांत नेपाल में 44 फीसदी कोरोना वायरस टेस्ट पॉजिटिव आए हैं। नेपाल के रेडक्रॉस की चेयरपर्सन डॉ नेत्रा प्रसाद तिमसिना ने कहा अगर हम इस कोरोना लहर को रोकने में सक्षम नहीं हुए तो भारत में जो हो रहा है, वह नेपाल का डरावना भविष्य है।

नेपाल में तेजी से बढ़ते कोरोना मामलों से देश में भय का वातावरण है। स्थानीय लोगों को डर सता रहा है कि नेपाल भारत से भी ज्यादा तबाही का सामना कर सकता है। दरअसल, नेपाल में भारत की तुलना में आबादी के लहिज से बहुत कम डॉक्टर हैं और कम लोगों को कोरोनारोधी वैक्सीन लगी है। देश में बहुत तेजी से बढ़ रहे कोरोना के मामले बताते हैं कि नेपाल हर मामले की जांच नहीं कर पा रहा है। नेपाल के स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता डॉ समीर अधिकारी ने कहा नेपाल में हालात दिन-प्रतिदिन खराब होते जा रहे हैं। यह भविष्य में नियंत्रण से बाहर हो सकता है।

नेपाल में राजधानी काठमांडू से लेकर एवरेस्ट बेस कैंप तक कोरोना ने तांडव मचा रखा है। 3 करोड़ की आबादी वाले नेपाल में एक महीने पहले 100 मामले सामने आ रहे थे और अब यह बढ़कर 8600 पहुंच गया है। नेपाल के कई लोगों ने आरोप लगाया है कि भारत की वजह से नेपाल में कोरोना वायरस बढ़ रहा है, क्योंकि दोनों देशों की सीमाएं खुली हुई हैं। अधिकारी ने दावा किया कि कई भारतीय अच्छी स्वास्थ्य सुविधा के लिए नेपाल भाग आए थे। बता दें कि महामारी की दूसरी लहर के बीच लगातार तीसरे दिन, नेपाल में एक दिन में कोरोना मामलों और उससे होने वाली मौतों में उछाल दर्ज किया गया है। स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता, जागेश्वर गौतम ने कहा अब, मामलों में तेजी से वृद्धि के कारण, अस्पताल दवाब बढ़ रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार पिछले सप्ताह की तुलना में इस सप्ताह मामलों में 127 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

बोगोटा में पुलिस हिंसा के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए लोग। वहीं इस दौरान पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े।

फिलीपींस चीन से दान में मिली अनअप्रूव्ड वैक्सीन लौटाएगा

मनीला, (एजेंसी)। चीन में 16 कोरोना वैक्सीन पर रिसर्च और डेवलपमेंट जारी है। 2 को मंजूरी मिल चुकी है। उसने कई छोटे देशों को यही वैक्सीन डोनेट की थीं, लेकिन अब फिलीपींस में चीन की साइनोफॉर्म वैक्सीन को लेकर विवाद हो गया है। दरअसल, फिलीपींस के राष्ट्रपति रोड्रिगो दुतेर्ते ने कैमरों के सामने यही वैक्सीन लगवा ली और अब उनकी आलोचना हो रही है। इसके बाद उन्होंने देश के लोगों से अनअप्रूव्ड वैक्सीन लगवाने के लिए माफी मांगी है। इतना ही नहीं फिलीपींस सरकार ने चीन से इन वैक्सीन को वापस लेने को कह दिया है। चीन ने साइनोफॉर्म की 1 हजार वैक्सीन फिलीपींस को डोनेट की थीं। नियमों के अनुसार वैक्सीन बनाने वाले देश के अलावा इसे उस देश में भी मंजूरी मिलनी जरूरी है जहां ये सप्लाई हो रही है। साइनोफॉर्म को चीन में तो मंजूरी मिली, लेकिन फिलीपींस में अब तक इसे हरी झंडी नहीं मिली। राष्ट्रपति ने मीडिया के सामने बुधवार को यह वैक्सीन लगवा ली। इसके बाद उनका विरोध शुरू हो गया।

उत्तरी सुमात्रा में माउंट सिनाबर्ग ज्वालामुखी से उठता हुआ लावा।

गंध से कोविड-19 के निदान में मिल सकती है मदद

लंदन, (एजेंसी)। कैप्सूल आधारित एक नए गंध परीक्षण से गंध पहचानने की क्षमता खोने से संबंधित विभिन्न बीमारियों, जैसे कोविड-19 आदि के त्वरित निदान में मदद मिल सकती है।

यह कहना है वैज्ञानिकों का। एक अध्ययन के मुताबिक यह परीक्षण पार्किंसन बीमारियों के मरीजों पर भी करना आसान है और बड़ी आबादी में कोविड-19 के निदान में भी मददगार है।

ब्रिटेन के क्वीन मेरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के शोधकताओं ने पाया कि गंध परीक्षण में पार्किंसन और अल्जाइमर समेत तंत्रिकातंत्र संबंधी कुछ स्थितियों के निदान में मदद की भी क्षमता है।

उन्होंने कहा, हालांकि ये परीक्षण व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं हैं, महंगे हैं और सामान्य स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्थाओं में इन्हें देने में काफी वक्त लगता है।

इस समस्या के समाधान के लिये दल ने एक नया गंध परीक्षण किट विकसित किया है जिसमें सुगंधित तेलों की खुशबू वाले कैप्सूलों को एक तरफ टेप वाली दो पट्टियों के बीच रखा जाता है।

गंध परीक्षण के लिये कैप्सूलों को उंगलियों और टेप की पट्टी के बीच तोड़ा जाता है जिससे कैप्सूल में भरी सामग्री बाहर आ जाती है।क्वीन मैरीज स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मेटेरियल्स साइंस से मुख्य शोधकर्ता अहमद इस्माइल कहते हैं, हमारा कैप्सूल आधारित गंध परीक्षण गंध पहचानने की अक्षमता से जुड़े विभिन्न रोगों के त्वरित निदान में सहायता कर सकता है।

इस्माइल ने कहा, इसमें पार्किंसन और अल्जाइमर बीमारियों के अलावा कोविड-19 भी शामिल हैं जिनके बारे में माना जाता है कि वह गंध पहचानने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। किसी व्यक्ति के इन खुशबुओं को पहचानने की क्षमता के आधार पर अंक तय किया जाता है अगर मरीज गंध हीनता का अनुभव करता है तो उसे चिकित्सकों को भेजा जा सकता है।

न्यूयॉर्क में वैक्सीन लगवाने वालों में एशियाई ज्यादा

न्यूयॉर्क, (एजेंसी)। अमेरिका में इन दिनों चल रहे वैक्सीनेशन प्रोग्राम में एशियाई नागरिक बढ़-चढ़कर शामिल हो रहे हैं। वियतनाम की रहने वाली 77 साल की फुंग गुयेन पहले हिंसा और फिर वायरस के प्रकोप से डरी हुई थीं, लेकिन जब उन्होंने वैक्सीन के बारे में सुना तो डोज लेने के लिए तैयार हो गईं। हालांकि उन्हें अंग्रेजी समझने और बोलने में दिक्कत होती है और उन्हें एक आंख से कम भी दिखता है, फिर भी उन्होंने एक स्वयंसेवी संस्था मेकॉन्ग की मदद से वैक्सीन डोज का अप्वाइंटमेंट लिया। संस्था की मिशेल बौंकोसोन ने उनकी मदद की। हालांकि इसमें एक महीने का वक्त लगा। न्यूयॉर्क शहर में, खासकर कुछ अप्रवासी और अल्पसंख्यक इलाकों में वैक्सीनेशन के प्रयास कम हो गए हैं। इसके बावजूद भी एशियन अमेरिकन समुदाय के लोग सबसे ज्यादा वैक्सीन लगवाने के लिए आ रहे हैं। आंकड़ों के मुताबिक, करीब 60 से 80 फीसदी वयस्क एशियाई जनसंख्या, जो करीब 6.80 लाख लोग होते हैं, ने पहला डोज ले लिया है। दूसरा बड़ा आंकड़ा श्वेत वयस्कों का है, जिनमें 49 फीसदी ने टीके की पहली डोज ली है।

एक सर्वे के मुताबिक, अमेरिकी चाहते हैं कि उन्हें वैक्सीन लगवाने के बदले इंसेंटिव मिले। वैक्सीन का एक भी डोज नहीं लिए करीब 7249 लोगों में 34 फीसदी ने कहा कि अगर उन्हें 100 डॉलर (7500 रुपए) इंसेंटिव मिले, तो वे वैक्सीन जरूर लगवाएंगे। जबकि 31 फीसदी 50 डॉलर में खुश हैं। वहीं 28 फीसदी ऐसे हैं जो 25 डॉलर से खुश हैं। दूसरी ओर, 62 फीसदी श्वेत और 53 फीसदी रिपब्लिकन ऐसे हैं जो मास्क नहीं पहनना चाहते, वहीं 35 फीसदी इसे अभी भी जरूरी मानते हैं।

पिछले साल दुनिया के 15 करोड़ लोग रहे भूखे

वॉशिंगटन, (एजेंसी)। पिछले साल दुनिया में 15 करोड़ से ज्यादा लोगों को भुख का सामना करना पड़ा। इतना ही नहीं, इनमें करीब डेढ़ लाख लोग ऐसे थे, जो भुखमरी की वजह से मौत की कगार पर पहुंच गए थे। अगर उन्हें तत्काल खाना नहीं दिया गया होता, तो उनकी मौत निश्चित थी। यह चिंताजनक खुलासा संयुक्त राष्ट्र के 16 संगठनों की रिपोर्ट में हुआ है। इसे दुनिया की 97 फीसदी आबादी वाले 55 देशों की स्थिति के आधार पर तैयार किया गया है। इनमें ज्यादातर अफ्रीकी देश हैं या वे हैं जो गृहयुद्ध झेल रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि लोगों को भुखमरी की कगार पर पहुंचने के पीछे की एक बड़ी वजह महामारी भी रही है। पिछले साल कोरोना संकट, आपातकालीन स्थिति और तबाही के चलते ज्यादा लोगों ने भोजन की जरूरत को महसूस किया। ऐसे लोगों की संख्या दो करोड़ ज्यादा रही। 2019 में यह करीब 13 करोड़ थी। रिपोर्ट में यह चेतावनी भी दी गई है कि यह साल यानी 2021 पिछले साल से ज्यादा भयानक होने वाला है। यह बेहद गंभीर और बदतर होगा। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने फूड क्राइसिस की 307 पेज की ग्लोबल रिपोर्ट के हवाले से लिखा है कि दुनिया में अधिक खाद्य असुरक्षा का सामना कर रहे लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इनमें उनकी संख्या ज्यादा है, जिन्हें तत्काल भोजन, पोषण और आजीविका सहायता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि 21 वीं सदी में अकाल और भुखमरी का कोई स्थान नहीं है। हमें इसे हल करने के लिए भूख और संघर्ष से निपटना होगा।

आदमखोर बेटे ने मां के 1000 टुकड़े किए और कच्चा चबा गया मांस, कुत्ते को भी खिलाया

मैड्रिड, (एजेंसी)। स्पेन में एक नरभक्षी बेटे ने अपनी मां की हत्याकर करके उनके शव के 1000 छोटे-छोटे टुकडे. कर दिए। इसके बाद उसने मांस के टुकड़ों को फ्रिज में रख दिया और करीब दो सप्ताह तक वह अपनी मां के शव के टुकड़े पका-पका कर खाता रहा। इस दौरान उसने अपने कुत्ते को भी मां का मांस खिलाया। स्पेन की एक अदालत ने अब हत्यारे बेटे सांचेज गोमेज को मां मारिया सोलेदाद गोमेज की हत्या के लिए दोषी ठहराया है।

यह वीभत्स घटना फरवरी 2019 में हुई थी और छह मई को खत्म हुई सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कलयुगी बेटे गोमेज को हत्या के लिए दोषी ठहराया है। नौ जजों की पीठ ने गोमेज के उस दावे को खारिज कर दिया कि वह अपनी मां पर हमला करने के दौरान मनोरोग से जूझ रहा था। गोमेज अपनी मां के पीछे चुपके से गया और उनकी गला घोटकर हत्या कर दी थी। इसके बाद गोमेज ने अपनी मां के शव के 1000 टुकड़े किए और दो सप्ताह तक उसे खाता रहा। इसके बाद पुलिस ने जांच के दौरान उसे पकड़ लिया।

जांच करने वाले अधिकारियों ने बताया कि गोमेज ने अपनी मां के शव के टुकड़ों को फ्रिज के अंदर रख दिया था, जबकि हड्डियों को घर के दराज में छिपाकर रख दिया था। मारिया का सिर, हाथ और उनका हृदय उनके बेड पर पाया गया था। पुलिस ने बताया कि मारिया के शरीर के बाकी हिस्सों को 1000 छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दिया गया था। एक पुलिस अधिकारी ने सुनवाई के दौरान साक्ष्य देते हुए कहा कि गोमेज ने दावा किया था कि उसने शरीर कुछ हिस्सों को कच्चा चबा लिया था, जबकि अन्य हिस्सों को पकाकर खाया। यही नहीं गोमेज ने मां के शव के कुछ हिस्सों को कुत्ते को भी खिला दिया। शव को काटने के लिए गोमेज ने आरी और चाकू का इस्तेमाल किया।

गोमेज ने दावा किया कि जब वह टीवी देख रहा था कि तब उसे अपनी मां को मारने का एक गुप्त संदेश मिला था। अभियोजन पक्ष ने इस नरभक्षी बेटे के लिए 15 साल 5 महीने की सजा देने की मांग की है। हालांकि अभी तक सुनवाई में शामिल जजों ने इस सजा को मंजूरी नहीं दी है।

सभी लोग वैक्सीन लगवाएं और अपने दोस्तों व रिश्तेदारों को भी प्रेरित करें : केजरीवाल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने वैक्सीनेशन के संबंध में कहा कि अंत-पंत में तो अपने को वैक्सीनेशन करना ही पड़ेगा, क्योंकि इसका समाधान वैक्सीनेशन ही है। जब से 18 से 45 साल तक के युवाओं के लिए हमने वैक्सीनेशन खोला है, तो युवाओं के अंदर वैक्सीन लगवाने के लिए बड़ा उत्साह है। पिछले तीन-चार दिनों के अंदर डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया, स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन और हम सब लोग कई वैक्सीनेशन सेंटर का दौरा किए हैं और युवाओं से मिले। वैक्सीनेशन को लेकर युवाओं में काफी उत्साह है। दिल्ली में वैक्सीनेशन सेंटर पर आपकी सरकार ने जो व्यवस्थाएं की है, उसको लेकर लोग बहुत खुश हैं। हमारे पास लोगों के काफी सारे संदेश आ रहे हैं। वे कह रहे हैं कि बहुत अच्छी व्यवस्था है। उनका कहना है कि सेंटर पर वैक्सीन लगवाने गया था, मुझे बहुत अच्छा लगा। सीएम ने सभी लोगों से अपील करते हुए कहा कि अगर आप 18 साल से ऊपर की उम्र के हैं और आपने वैक्सीन नहीं लगवाया है, तो आप जरूर पंजीकरण करिए, वैक्सीनेशन लगवाने का समय लीजिए और सेंटर पर जाकर वैक्सीन लगाइए। आप अपने सभी दोस्तों और रिश्तेदारों को बताइए, सब लोगों को वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित करिए।

सीएम ने कहा कि अभी तक हम लोग दिल्ली में कुल 35,74,000 डोज दे चुके हैं। इनमें 28 लाख लोगों ने केवल एक डोज ली है और 7,76,000 लोगों ने दोनों डोज ली है। पिछले 3 दिन से 18 साल से 45 साल तक के युवाओं के लिए वैक्सीनेशन खुला है। इन तीन दिनों में दिल्ली में 1.30 लाख के करीब युवाओं को वैक्सीन लगी है। मैं उम्मीद करता हूं कि आने वाले दिनों में और भी लगेगी। पिछले तीन दिनों के अंदर सारी व्यवस्थाएं बहुत अच्छी तरीके से लागू कर दी गई हैं। अब सारी व्यवस्थाएं बहुत ठीक तरह से चल रही है। आज हम चाहें तो इस वैक्सीनेशन को कई गुना बढ़ा सकते हैं, लेकिन अभी वैक्सीन आपूर्ति की कमी हो रही है। अगर हमें समुचित वैक्सीन की आपूर्ति मिल जाए, तो जैसा मैंने वादा किया था कि तीन महीने के अंदर हम पूरी दिल्ली को वैक्सीन लगा देंगे। हम वैक्सीन की आपूर्ति का इंतजार कर रहे हैं। अगर वैक्सीन की आपूर्ति हमारे पास पर्याप्त आ जाएगी और जितनी जल्दी आ जाएगी, हम बहुत सारे सेंटर खोल देंगे, सेंटर खोलने में अब कोई दिक्कत नहीं है। दिल्ली सरकार सभी के साथ मिल कर काम कर रही है। यह इतनी बड़ी महामारी है कि कोई भी अकेले इससे पार नहीं पा सकता है। मैं उम्मीद करता हूं कि आने वाले दिनों में इसी तरह से सब लोग मिलकर काम करेंगे, सारी सरकारें मिलकर काम करेंगी। हम लोगों को कोर्ट का बहुत सहयोग मिल रहा है। सभी संस्थाएं मद कर रही हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि उपर वाले की कृपा से हम जरूर कोरोना से मुक्ति पाएंगे।

भगत सिंह सेवा दल ने कोरोना संकट में शवों का अंतिम संस्कार का जिम्मा उठाया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली में कोरोना महामारी के दौरान लगातार नए संक्रमित मरीजों के साथ ही मरने वालों की संख्या बढ़ रही है। इस स्थिति में कोरोना संक्रमित के शवों का अंतिम संस्कार करना एक बड़ी चुनौती बन गया है। लोगों के लिए स्थिति उस समय मुश्किल होती है, जब पूरा परिवार संक्रमित हैं और उसमें से किसी एक सदस्य की मौत हो जाती है। कोरोना की वजह से रिश्तेदारों, पड़ोसियों की मदद नहीं मिलने पर मृतक का अंतिम संस्कार करने वाले कोई नहीं होता है। हालांकि, कोरोना संक्रमित परिवारों की मदद के लिए कई संस्थाएं व संगठन सामने आ रहे हैं। इनमें से एक नाम हैं, जितेंद्र सिंह शंटी का सामने आया है। शंटी अपने संगठन भगत सिंह सेवा दल के द्वारा कोरोना संक्रमित शवों के अंतिम संस्कार में मदद कर रहे हैं।

शंटी का कहना है कि उनका शहीद भगत सिंह सेवा दल पिछले 25 सालों से फील्ड में काम कर रहा है। वह फ्री में लोगों का अंतिम संस्कार करने के लिए 18 एंबुलेंस के जरिये मदद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मेरे दोनों बेटे भी इस काम में मेरी मदद करते हैं। शंटी का कहना है कि उनकी टीम जिसमें ड्राइवर्स और अंतिम संस्कार करने वाले वॉरियर्स शामिल हैं, बेहद समर्पण से काम करते हैं। शंटी ने बताया कि महामारी के समय में लोग अपने पिता को उठाने से डरते हैं। उन्होंने कहा कि उनके पास आज भी 40 से 50 कॉल डेली ऐसी आ रही हैं जिसमें कहा जाता है कि घर में लाश पड़ी हुई है और शव को उठाने वाला कोई नहीं हैं।

शंटी ने बताया कि जब पिछला कोरोना का काल आया था तब मैंने 967 शवों का अंतिम संस्कार कराया था। उस समय मैं खुद, मेरी पत्नी और बच्चे के साथ ही मेरा स्टाफ भी कोरोना संक्रमित हो गया था। उन्होंने बताया कि उनका एक ड्राइवर 55 वर्षीय आरिफ खान कोरोना में लोगों की सेवा करते-करते शहीद भी हो गया था। उन्होंने कहा कि कोरोना की ये जो लहर आई है, इसमें एक महीने अंदर अभी तक हमने 1352 शवों का अंतिम संस्कार कराया है। शंटी ने बताया कि अब तक जिन 1352 शवों का अंतिम संस्कार किया उसमें से 153 ऐसी डेड बॉडी थीं जिन्हें लोग श्मशान घाट के दरवाजे तक छोड़ गए।

मनमाने दाम नहीं वसूल पाएंगे एम्बुलेंस चालक, दिल्ली सरकार ने तय किए दाम

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना संक्रमण के इस दौर में दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने गुरुवार को कोविड-19 मरीजों को एक बड़ी राहत देते हुए निजी एम्बुलेंस चालकों द्वारा की जा रही लूट और मुनाफाखोरी पर लगाम लगाते हुए उनके लिए अब रेट 1,500 से 4,000 रुपये के बीच तय कर दिए हैं। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमारे संज्ञान में आया है कि दिल्ली में निजी एम्बुलेंस सेवाएं नाजायज रूप से अधिक रुपये वसूल रही हैं। निजी एम्बुलेंस सेवाओं की इस व्यवस्था पर रोक लगाने के लिए दिल्ली सरकार ने अधिकतम कीमतें तय की हैं, जो वो ले सकती हैं। आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। सरकार की ओर से जारी आदेश में कहा कहा गया है कि कैटस दिल्ली में एक एकल टोल फ्री नंबर 102 के माध्यम से 247 निः शुल्क एम्बुलेंस सेवा प्रदान कर रही है। हालांकि, यह देखने में आया है कि कोविड-19 महामारी के दौरान दिल्ली में निजी एम्बुलेंस चालक और सेवा प्रदाता मरीजों से अत्यधिक रुपये वसूल रहे हैं जो कि एक गंभीर चिंता का विषय है। इसलिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि पीटीए (निजी परिवहन एम्बुलेंस), बीएलएस (बेसिक लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस) और एएलएस (एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस) के लिए अधिकतम दरें दिल्ली में निम्नानुसार रखी जाएंगी इन दरों में ऑक्सीजन, सभी एम्बुलेंस के उपकरण, पीपीई किट, दस्ताने, फेस शील्ड, सैनिटाइडर, ड्राइवर, ईएमटी, डॉक्टर आदि सभी तरह के खर्च शामिल होंगे। गौरतलब है कि बीते दिनों दिल्ली की सरिता विहार थाना पुलिस ने एक एम्बुलेंस चालक को गिरफ्तार करते हुए उसकी एम्बुलेंस भी जब्त कर ली थी। पुलिस ने बताया था कि आरोपी एम्बुलेंस चालक ने कोरोना संक्रमित एक मरीज को अपोलो अस्पताल से महज 2 किलोमीटर दूर होली फैमिली अस्पताल में शिफ्ट करने के लिए 8,500 रुपये की मांग थे। मरीज के परिजनों ने इसकी शिकायत पुलिस से कर दी थी। इससे पहले लूट का ऐसा ही एक मामला कुछ दिन पहले नोएडा में भी सामने आया था, जहां एक एम्बुलेंस वाले ने 25 किलोमीटर जाने के लिए मरीज के परिजनों से 42 हजार रुपये ले लिए थे। मरीज के परिजनों ने इस मामले की शिकायत सोशल मीडिया पर नोएडा पुलिस से कर दी थी। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने उस एम्बुलेंस वाले को पकड़ लिया था तो उसने अपनी गलती मान ली थी और वो मरीज से लिए गए अतिरिक्त पैसों को लौटने को राजी हो गया था। इससे पहले लूट का ऐसा ही एक मामला कुछ दिन पहले नोएडा में भी सामने आया था, जहां एक एम्बुलेंस वाले ने 25 किलोमीटर जाने के लिए मरीज के परिजनों से 42 हजार रुपये ले लिए थे। मरीज के परिजनों ने इस मामले की शिकायत सोशल मीडिया पर नोएडा पुलिस से कर दी थी। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने उस एम्बुलेंस वाले को पकड़ लिया था तो उसने अपनी गलती मान ली थी और वो मरीज से लिए गए अतिरिक्त पैसों को लौटने को राजी हो गया था।

दिल्ली को मिलेगी 976 मीट्रिक टन ऑक्सीजन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता और विधायक राघव चड्ढा ने कहा कि केंद्र सरकार दिल्ली को रोजाना 730 मीट्रिक टन से अधिक ऑक्सीजन उपलब्ध कराए। सिर्फ एक दिन के लिए अतिरिक्त इंतजाम ना करे। दिल्ली की जरूरत 976 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की है। केंद्र सरकार ने पहली बार दिल्ली को 75 फीसदी ऑक्सीजन दी है। हमें भरोसा है कि हाईकोर्ट-सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद पूरी 976 मीट्रिक टन ऑक्सीजन मिलेगी। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों से दिल्ली को 250 से 400 मीट्रिक टन ऑक्सीजन मिल रही थी। हाईकोर्ट-सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के चलते पहली बार केंद्र सरकार ने 730 मीट्रिक टन ऑक्सीजन दी है। दिल्ली को 730 मीट्रिक टन ऑक्सीजन में से 33 फीसदी ऑक्सीजन निर्धारित प्लांटों से नहीं दी है बल्कि हाईकोर्ट-सुप्रीम कोर्ट के दबाव में अतिरिक्त इंतजाम किया गया है। राघव ने कहा कि दिल्ली को 75 फीसदी ऑक्सीजन मिलने से एसओएस कॉल में कमी आयी है। रोजाना आने वाली 40-50 एसओएस कॉल की जगह मात्र 16 फोन आए हैं। दिल्ली सरकार ने सभी 16 एसओएस कॉल की दिक्कतों को दूर किया और 16 अस्पतालों में भर्ती 2777 लोगों को ऑक्सीजन की कमी नहीं होने दी। राघव चड्ढा ने कहा कि हम केंद्र सरकार से निवेदन करते हैं कि 250 मीट्रिक टन ऑक्सीजन का जो अतिरिक्त इंतजाम किया गया है उसे स्थाई कर दीजिए। दिल्ली के लिए आवंटित नियमित स्त्रोतों से जोड़ दीजिए, केवल एक बार का इंतजाम मत करिए। हमें जहां से 5 मई को ऑक्सीजन मिली है वहां से रोजाना मिलती रहे। ऐसा नहीं है कि 1 दिन 730 मीट्रिक टन ऑक्सीजन मिल गई तो कल और परसो जरूरत नहीं पड़ेगी। हमारी जरूरत 976 मीट्रिक टन की है जो कि रोजाना दिल्ली को चाहिए। यह कोई 1 दिन या एक सप्ताह की नहीं बल्कि रोजाना की जरुरत है। केंद्र सरकार से विनती है की 730 मीट्रिक टन ऑक्सीजन हमें रोजाना उपलब्ध कराइये। उन्होंने कहा कि हमदर्द नगर स्थित मजीदिया अस्पताल, वसंत कुंज स्थित इंडियन स्पाइनल अस्पताल आदि अस्पतालों में रिजर्व ऑक्सीजन से सिलेंडर और लिक्विड ऑक्सीजन पहुंचा कर व्यवस्था को दुरुस्त किया। एसओएस कॉल करने वाले इन 16 अस्पतालों में 2777 ऑक्सीजन के बेड हैं, यानी कि इतने मरीज उन पर भर्ती थे। हमने समय से ऑक्सीजन पहुंचा कर 2777 लोगों को ऑक्सीजन की कमी नहीं होने दी।

दिल्ली में बेच रहे थे नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन, पुलिस ने दो को दबोचा

नई दिल्ली । दिल्ली में नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन बेचने के आरोप में दिल्ली पुलिस ने शुक्रवार को 2 लोगों को गिरफ्तार किया है. इनके पास से 15 नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन भी बरामद किया गया है. इस मामले में नागलोई पुलिस स्टेशन में एक मामला दर्ज किया गया है.

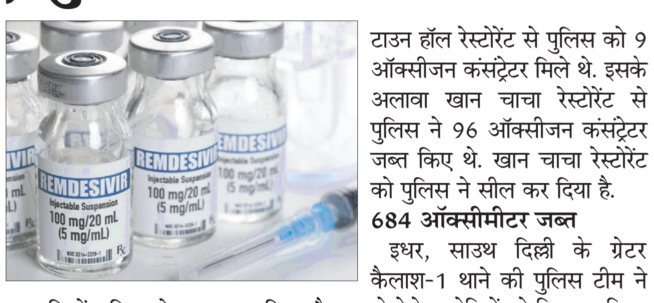

जीवनरक्षक दवाओं की कालाबाजारी– दिल्ली में कोरोना संक्रमण के मामले बढ़ने के साथ ही जीवनरक्षक दवाओं की कालाबाजारी और नकली दवाएं बेचेने के मामले भी बढ़ गए हैं. ताजा मामला नागलोई का है. यहां दिल्ली पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार कर उनके पास से 15 नकली रेमडेसिविर इंजेक्शन जब्त किया है. इन आरोपियों के पास से पुलिस को 34 हजार रुपये कैश भी मिले हैं. इसके अलावा इन आरोपियों के पास से एक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर और एक कार भी बरामद हुआ है जिन्हें पुलिस ने जब्त कर लिया है. पुलिस इस मामले में विस्तृत जांच-पड़ताल कर रही है.

24 घंटे में 524 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर जब्त– आपको बता दें कि पिछले 24 घंटों के दौरान दिल्ली पुलिस ने राजधानी के 3 नामी-गिरामी रेस्टोरेंट पर छापा मारकर 524 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर जब्त किए हैं. राजधानी दिल्ली के बेहद पॉश इलाके खान मार्केट में आज यानी शुक्रवार को ही दिल्ली पुलिस ने कई मशहूर रेस्टरोरेंट में छापा मारकर बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन कंसंट्रेटर जब्त किए. टाउन हॉल रेस्टोरेंट से पुलिस को 9 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर मिले थे. इसके अलावा खान चाचा रेस्टोरेंट से पुलिस ने 96 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर जब्त किए थे. खान चाचा रेस्टोरेंट को पुलिस ने सील कर दिया है.

684 ऑक्सीमीटर जब्त

इधर, साउथ दिल्ली के ग्रेटर कैलाश-1 थाने की पुलिस टीम ने दो ऐसे आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जो थोक में मेडिकल और जीवनरक्षक उपकरणों की कालाबाजारी कर रहे थे. यहां आरोपियों के पास से 10 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर सहित उसके लिए प्रयोग होने वाले 82 प्लास्टिक पाइप्स, 3 हजार 486 डिजिटल थर्मामीटर, 684 ऑक्सीमीटर और 10 नेबुलाइजर मिले हैं. ष्ठष्टक्क अतुल ठाकुर और ,ष्टक्क लक्ष्य पांडे के मुताबिक, इस मामले में जल्द ही कुछ अन्य आरोपियों की भी गिरफ्तारी हो सकती है.

कोई आराम नहीं : दिल्ली में कोरोना मरीजों की बढ़ती लाशों के बोझ से जूझ रहे श्मशान घाट के कर्मी

नई दिल्ली । दिल्ली में कोरोना की दूसरी लहर में बढ़ती मौतों की तादाद से श्मशान घाट के कर्मी भी जूझ रहे हैं. पूर्वी दिल्ली के गाजीपुर शवदाह गृह में 19 साल का श्मशान घाट कर्मी ने दोपहर में 7वीं चिता के लिए सारे प्रबंध कर रहा था. यह लंच के पहले का वक्त था. उसे कोविड मरीजों के शवों को लेने की जिम्मेदारी सौंपी गई है. वह केवल मास्क पहनता है. पीपीई किट तो उसे कभी भी मयस्सर नहीं हुई. वह कोरोना मरीजों की चिंताओं के इतने नजदीक खड़े होना पड़ता है कि प्लास्टिक की पीपीई किट वह पहन ही नहीं सकता.

एक शख्स ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, रोजाना रात 12.30 बजे तक कोई वक्त नहीं मिलता. उसके बाद ही हम खाते और सोते हैं. और सुबह 5 बजे उठना पड़ता है, ताकि राख को हटाया जा सके और पीड़ित परिवारों को दे सकें. फिर सुबह 10 बजे फिर अंतिम संस्कार की प्रक्रिया शुरू की जाती है. यूपी के अयोध्या का रहने वाला ये शख्स रोजाना 12 घंटे से ज्यादा काम करता है और शवदाह गृह में ही सोता है.

पिछले साल कोरोना की पहली लहर के दौरान गाजीपुर श्मशानघाट के 15 में से 5 कर्मी भाग खड़े हुए थे. 19 साल के उस व्यक्ति ने बताया, वो ये जिम्मेदारी छोड़कर अचानक नहीं जा सकता. अगर वो गया तो शव लेकर यहां आने वाले लोगों को परेशानी होगी. वह पिछले दो माह में तीन बार ही शवदाह गृह छोड़कर कहीं गया है. उसे कोरोना से रिकॉर्ड मौतों के बीच 24 घंटे शवदाह गृह में ही मौजूद रहना पड़ता है. उत्तर प्रदेश से भी तमाम लाशें यहां आती हैं.

श्मशान घाटों में बढ़ती लाशों और परिजनों की चीख-पुकार के बीच काम को लेकर सवाल पर उसने कहा कि ज्यादा सोचने से आदमी कमजोर हो जाता है. हम बस अपनी जिम्मेदारी निभा रहे है. इन वर्करों को हर महीने 10 से 15 हजार रुपये मिलते है. लेकिन हर कोई ये बताने में हिचकिचाता है कि आखिरी बार उन्हें कब वेतन मिला था. उनका कहना है कि वे बस अपनी धार्मिक जिम्मेदारी निभा रहे हैं.

घर में बिस्तर पर पड़ा है कोरोना संक्रमित मरीज, ऑक्सीजन सिलेंडर के लिए खा रहे दर-दर की ठोकरें

नई दिल्ली । राजधानी के अस्पतालों में बेड की किल्लत को देखते हुए होम आइसोलेशन में ईलाज करा रहे कोरोना संक्रमितों के तीमारदार ऑक्सीजन के लिए दर-दर भटक रहे हैं। सिर्फ राजधानी ही नहीं बल्कि गुरुग्राम, पलवल, फरीदाबाद, बहादुरगढ़, रोहतक तक ऑक्सीजन की आस में जा रहे हैं।

एक अनुमान के मुताबिक अभी राजधानी में होम आइसोलेशन में करीब 50 हजार मरीज हैं, जिसमें से करीब 12 हजार मरीजों को ऑक्सीजन की जरूरत बताई जा रही है। लोगों की बेबसी व जरूरत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सिलेंडर में ऑक्सीजन भरवाने के लिए रि-फिलिंग सेंटर के बाहर घंटों लाइन में लगे रहते हैं। मिल गया तो ठीक और नहीं मिला तो फिर दूसरे स्थान के लिए रवाना हो जाते हैं।

अंबे गैस इंटरप्राइजेज के मालिक धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि मेरा प्लांट पिछले दो दिनों से चल रहा है। इन दो दिनों में दो हजार से 25 सौ लोगों के छोटे सिलेंडर यहां पर भरे गए हैं। लंबी लाइनें लगी रहती हैं। जब तक ऑक्सीजन रहता है हम देते हैं, लिक्विड के खत्म होने पर हमारे हाथ भी बंधे रहते हैं। उन्होंने कहा कि बृहस्पतिवार तक हमने ऑक्सीजन दिया है, लेकिन अब शुक्रवार से सरकार ई-टोकन जारी करेगी और उसी आधार पर होम आइसोलेशन में रह रहे लोगों को ऑक्सीजन दी जाएगी। इसका मतलब अब सीधे किसी को ऑक्सीजन नहीं मिलेगी।

लाजपत नगर पार्ट एक के कृष्णा नगर मार्केट स्थित गुरुद्वारा में भी ऑक्सीजन दी जा रही है। रश्मित ने बताया कि यहां पर प्रतिदिन दो सौ से ढाई सौ लोगों को ऑक्सीजन सिलेंडर भरकर दिया जाता है। यहां से होम आइसोलेशन में रहने वाले संक्रमितों के साथ-साथ अस्पताल में भर्ती मरीजों के लिए भी लोग ऑक्सीजन ले जाते हैं। कई बार लोग ऑक्सीजन खत्म होने के बाद आते हैं तो बड़ी तकलीफ होती है। जनकपुरी में लोगों को ऑक्सीजन सिलेंडर भरकर दे रहे अमर तिवारी ने बताया कि नारायणा से बड़े सिलेंडर भरवाकर लाता हूं। प्रतिदिन 50 लोग यहां से निश्चित रूप से ऑक्सीजन ले जाते हैं।

यमुनापार में दिलशाद गार्डन स्थित गुरुद्वारे के पास विनायक फिलिंग केंद्र पर ऑक्सीजन मिल रही है। यहां के संचालक का कहना है कि रोजाना 200 से 250 लोगों को सिलेंडर देकर मदद की जा रही है। केंद्र पर भीड़ न हो इसके लिए खाली सिलेंडर जमा करवाकर बुकिंग करते हैं। इसके बदले में उन्हें पर्ची दी जा रही है जिस पर सिलेंडर मालिक का नाम व किस दिन मिलेगा इसका विवरण दर्ज होता है।

दिल्ली हाई कोर्ट में उठा निजी अस्पतालों में महंगे बेड का मुद्दा

नई दिल्ली । दिल्ली के विभिन्न अस्पतालों में ऑक्सीजन समेत अन्य सुविधाओं को लेकर दिल्ली हाई कोर्ट में शुक्रवार को भी सुनवाई जारी है। सुनवाई के दौरान कोर्ट के समक्ष दिल्ली के विभिन्न अस्पतालों द्वारा नियम विरुद्ध बेड के लिए बहुत ज्यादा कीमत मांगने का मुद्दा भी उठा। कोर्ट के सक्षम वकील अभय गुप्ता ने बेड के लिए मनमाने दाम लिए जाने का मुद्दा उठाया।

उधर, कोरोना वायरस संक्रमण के बीच ऑक्सीजन संकट से जूझ रही दिल्ली में मरीजों को अस्पतालों में बेड के लिए भी मारामारी करनी पड़ रही है। दिल्ली में सत्तासीन आम आदमी पार्टी सरकार के तमाम दावों के बावजूद कोरोना संक्रमित मरीज बेड के लिए परेशान हो रहे हैं। इस दौरान निजी अस्पतालों लेकर तमाम तरह की शिकायतें मिल रही हैं। लोगों को कहना है कि इस संकट के दौरान निजी अस्पताल में बेड के लिए बहुत ज्यादा पैसे मांग रहे हैं। इस बीच कोरोना संक्रमित मरीजों को बेड संबंधी परेशानी से बचाने के लिए दिल्ली सरकार ने राजधानी के सभी अस्पतालों को बेड के बारे में खास निर्देश दिया है। सरकार के निर्देश के मुताबिक, दिल्ली कोरोना ऐप पर हर 2 घंटे में बेड की उपलब्धता की जानकारी देते रहना होगा। सरकार का मानना है कि इससे उन लोगों को मदद मिलेगी जिन्हें बेड की तलाश में इधर-उधर भटकना पड़ता हैष दिल्ली सरकार का यह आदेश राजधानी के सभी अस्पतालों के लिए जारी कर दिया गया है. इसमें कहा गया है कि अस्पतालों को हर 2 घंटे के भीतर ये अपडेट करते रहना होगा कि उनके पास बेड की उपलब्धता की क्या स्थिति ।

दिल्ली कोरोना ऐप पर हर 2 घंटे में बेड के बारे में अपडेट दें अस्पताल, सरकार ने दिया आदेश

नई दिल्ली । कोरोना संक्रमण के बीच ऑक्सीजन संकट से जूझ रही दिल्ली में मरीजों को अस्पतालों में बेड के लिए भी मारामारी करनी पड़ रही है. सरकार के तमाम दावों के बाद भी संक्रमित मरीज बेड के लिए परेशान हो रहे हैं. मरीजों को इसी परेशानी से बचाने के लिए अब दिल्ली सरकार ने राजधानी के सभी अस्पतालों को बेड के बारे में खास निर्देश दिया है.

दिल्ली सरकार ने राजधानी के सभी अस्पतालों को आदेश दिया है कि वे दिल्ली कोरोना ऐप पर हर 2 घंटे में बेड की उपलब्धता की जानकारी देते रहें. सरकार का मानना है कि इससे उन लोगों को मदद मिलेगी जिन्हें बेड की तलाश में इधर-उधर भटकना पड़ता है. दिल्ली सरकार का यह आदेश राजधानी के सभी अस्पतालों के लिए जारी कर दिया गया है. इसमें कहा गया है कि अस्पतालों को हर 2 घंटे के भीतर ये अपडेट करते रहना होगा कि उनके पास बेड की उपलब्धता की क्या स्थिति है.

निगरानी के लिए जिम्मेदारी तय

सरकार ने इसकी निगरानी के लिए जिम्मेदारी भी तय कर दी है. दिल्ली सरकार के आदेश के तहत अस्पताल बेड की डिटेल दिल्ली कोरोना ऐप पर डाल रहे हैं या नहीं, यह देखने का काम अस्पतालों में बनाए गए नोडल ऑफ़िसर और इंचार्ज का होगा. उन्हें इसका पूरा पालन करवाना होगा. आपको बता दें कि राजधानी दिल्ली में कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों के बीच सरकार ने एक हजार से ज्यादा आईसीयू बेड तैयार करने की योजना पर काम शुरू कर दिया है.

ऑक्सीजन की सप्लाई के बाद 1200 बेड के लिए काम शुरू

कोविड महामारी से लड़ने के लिए केजरीवाल सरकार ने बीते दिनों घोषणा की कि अगले कुछ दिनों में दिल्ली के अंदर 1200 आईसीयू बेड तैयार कर लिए जाएंगे. मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को कहा था कि दिल्ली को ऑक्सीजन की पूरी सप्लाई नहीं मिल रही थी, जिसके कारण बेड कम पड़ने लगे थे.

लेकिन गुरुवार को पहली बार दिल्ली के अस्पतालों के लिए केंद्र ने 730 टन ऑक्सीजन भेज दी. इससे राहत मिलेगी. सीएम ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया था कि इस सप्लाई को बरकरार रखा जाए.

सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट पर रोक की मांग तेज, सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाई कोर्ट में भेजा मामला

नई दिल्ली । कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट सवालों के घेरे में आ गया है. इस प्रोजेक्ट के कामकाज को रोके जाने की मांग की जा रही है. इससे संबंध में सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गई थी. हालांकि, शीर्ष अदालत ने मामले को दिल्ली हाई कोर्ट भेज दिया है. साथ ही सुप्रीम कोर्ट की तरफ से मामले की जल्द सुनवाई करने का आग्रह किया गया है. मीडिया में जारी कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट ने बीते बुधवार को याचिका पर सुनवाई को लेकर सहमति जताई थी. याचिकाकर्ता आन्या मल्होत्रा और सोहेल हाशमी ने अदालत से जारी निर्माण को रोकने की मांग की थी. इससे पहले हाई कोर्ट ने 17 मई को सुनवाई रखी थी. लेकिन याचिकाकर्ता का कहना है की इससे बहुत देर हो जाएगी. इसलिए याचिका सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई थी.

कार्य प्रगति पर है! कांग्रेस का सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट को लेकर सरकार पर हमला–सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के तहत नया संसद भवन, प्रधानमंत्री और उप राष्ट्रपति के घर के अलावा कई सरकारी बिल्डिंग राजपथ और इंडिया गेट के आस पास बन रहे है. इस जनहित याचिका में मांग की गई है की सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट के काम पर फिलहाल रोक लगा दी जाए क्योंकि वहां काम कर रहे मजदूर कोरोना की चपेट में आ सकते हैं.

दिल्ली तक ऑक्सीजन लाने सरकार का बड़ा प्लान, अस्पतालों के लिए खास इंतजाम

दिल्ली. राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ऑक्सीजन आपूर्ति को लेकर केजरीवाल सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों की गुरूवार को बैठक हुई. इसकी जानकारी पत्रकारों को परिवहन विभाग के प्रमुख सचिव और स्वास्थ्य ओएसडी आशीष कुंद्रा ने दी. उन्होंने बताया कि सीएम अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली सरकार शहर में तरल ऑक्सीजन के परिवहन की क्षमता को बढ़ा रही है. दिल्ली सरकार ने टाटा स्टील के कलिंगा नगर स्थित ऑक्सीजन प्लांट पर दो आईएएस अधिकारियों को नियुक्त किया है. दिल्ली सरकार ने शहर के भीतर विभिन्न अस्पतालों और संस्थानों में ऑक्सीजन के वितरण के लिए एक विकेंद्रीकृत प्रबंधन प्रणाली बनाई है.

ओएसडी आशीष कुंद्रा ने कहा कि दिल्ली को रेल मार्ग के माध्यम से 5 मई को लगभग 360 मीट्रिक टन ऑक्सीजन मिली है. ऑक्सीजन आपूर्ति का सबसे प्रभावी तरीका रेलवे और कंटेनरीकृत कार्गो है. दिल्ली में तरल ऑक्सीजन के परिवहन के लिए धीरे-धीरे क्षमता बढ़ायी जा रही है. रेलवे के माध्यम से ऑक्सीजन की आपूर्ति बेहतर हो गई है. दिल्ली को टैंकरों और कंटेनरों के माध्यम से आसपास के पानीपत जैसे क्षेत्रों से ऑक्सीजन की आपूर्ति हो रही है.

ऑक्सीजन टैंकरों को किया जा रहा ट्रैक

दिल्ली सरकार की टीम हर टैंकर की आवाजाही पर नज़र रख रही है. शहर में ऑक्सीजन लाने वाले 41 टैंकरों को जीपीएस ट्रैकिंग के माध्यम से ट्रैक किया जा रहा है. एक डैशबोर्ड तैयार किया गया है और राष्ट्रीय राजधानी में ऑक्सीजन लाने वाले कार्गो को ट्रैक करने के लिए अमेजन के साथ भागीदार की गई है. दिल्ली सरकार ने शहर के भीतर विभिन्न अस्पतालों और संस्थानों में ऑक्सीजन वितरण के लिए विकेंद्रीकृत प्रबंधन प्रणाली बनाई है.

सभी डीएम एक-एक रीफिलर को ट्रैक कर रहे हैं और सुनिश्चित कर रहे हैं कि जल्द से जल्द ऑक्सीजन अस्पतालों तक पहुंचे.

स्वास्थ्य विभाग ने ऑक्सीजन सिलेंडर के डीलर नेटवर्क को सक्रिय करने का आदेश भी जारी किया है. औद्योगिक गैस देने वाले सभी डीलऱओं को सिलेंडर भरने वालों के साथ जोड़ा गया है. नागरिकों को सिलेंडर देने वाले रिटेलर आउटलेट को ये डीलर सिलेंडर देते हैं.

इसके अलावा सरकार ऑक्सीजन के लिए बफर स्टॉक भी बना रही है. शहर के 11 उपायुक्तों को 505 डी-टाइप सिलेंडर पहले ही दिए जा चुके हैं. दिल्ली सरकार सिलेंडर दान करने के लिए अपील भी कर रही है. इसके लिए आप आधिकारिक वेबसाइट www.delhigov.in पर लॉग इन करें और डोनेट टैब पर क्लिक कर सकते है. शहर में ऑक्सीजन की आपूर्ति और मांग के वास्तविक समय की निगरानी के लिए 7 मई को नियंत्रण कक्ष बनाया जाएगा.

संपादकीय

जांच से टीके तक चुनौतियां

जब संक्रमण तेजी से फैल जाए और उसके भी आंतरिक कारण हों, तब जिस भी व्यक्ति को खांसी, जुकाम और बुखार हो, तो बहुत आशंका है कि उसे कोरोना संक्रमण होगा। ऐसे लक्षण वाले सभी लोगों को आरटीपीसीआर जांच कराने की जरूरत नहीं है। इससे हम जांच पर पड़ रहे अनावश्यक भार को कम कर सकते हैं। कम से कम लोग जांच कराएंगे, तो जरूरी व गंभीर लोगों की जांच में तेजी आएगी। अब यह संख्या दिखाना कदापि आवश्यक नहीं है कि हमारे कितने लोग संक्रमित हो गए, अभी इलाज करने की ज्यादा जरूरत है। मिसाल के लिए, जब स्वाइन फ्लू आया था, तो उसके खत्म होने का कारण ही यही था कि हमने जांच को बंद कर दिया था, जांच हम उन्हीं की करते थे, जहां जरूरी हो जाता था, तो इससे बीमारी अपने आप कम हुई। स्वाभाविक है, जैसे-जैसे संक्रमण के मामले बढ़ते हैं, वैसे-वैसे लोगों के बीच तनाव भी बढ़ता है। अब यह मानकर चलना चाहिए कि काफी लोग संक्रमित हो गए हैं और अब जो लोग ऐसे लक्षणों के साथ आएंगे, वो कोरोना पीड़ित ही होंगे। लक्षण आते ही घर में ही क्वारंटीन रहते हुए अपना इलाज शुरू कर देना चाहिए। जांच कराने की भागदौड़ से बचना चाहिए। इस मोर्चे पर भी आईसीएमआर काम कर रहा है कि कोई ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, ताकि जहां आवश्यक हो, वहीं अस्पताल का सहारा लिया जाए। इसके मापदंड तय किए जा रहे हैं, एक अल्गोरिदम बनाने की कोशिश हो रही है, जिसे सिंड्रोमिक अप्रोच भी कहते हैं। यह इसलिए जरूरी है, ताकि केवल लक्षण के आधार पर इलाज हो सके। साथ ही, यह जरूरी नहीं कि हम मरीज को भर्ती करने के लिए आरटीपीसीआर का इंतजार करें। रेपिड टेस्ट की रिपोर्ट आधे घंटे से भी कम समय में मिल जाती है। तत्काल मरीज का इलाज शुरू करें और उसी दौरान आरटीपीसीआर भी कर लें। इधर, आईसीएमआर ने आरटीपीसीआर सहित छह जांचों को मंजूरी दी है। अभी रिपोर्ट आने में देरी हो रही है, लेकिन आरटीपीसीआर की जांच की जो साइकिल है, वह चलती है, तो तीन से चार घंटे लगते हैं। आप कितनी भी जल्दी करें, लैब पास में हो, तो भी चार-पांच घंटे तो रिपोर्ट आने में लग ही जाते हैं। हमारे देश में बहुत सारे ऐसे जिले हैं, जहां आरटीपीसीआर सुविधा उपलब्ध नहीं है। सैंपल को दूसरे जिलों में भेजा जाता है, तो उसमें और समय लगता है। इस वजह से देर होती है। हर जगह लैब खोलना भी आसान नहीं होता। लैब की गुणवत्ता जरूरी है, उसे स्थापित करने की एक पूरी प्रक्रिया है। लैब सुविधा अगर बिना गुणवत्ता वाली जगह पर होगी, तो गलत रिपोर्ट आएगी। लैब में अनेक तरह के रसायन होते हैं, उनका रखरखाव भी महत्वपूर्ण होता है। कितने तापमान पर रखना है, कहां रखना है, लैब को पूरे मापदंड पर खरा उतरना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि लैब आप कहीं भी खोल दें और जांच शुरू हो जाए। अच्छी लैब वही है, जो तय मापदंडों को खरी उतरती हो।

पिछले वर्ष जांच की जो स्थिति थी, उसमें काफी सुधार आया है, लेकिन अभी की जरूरत के हिसाब से देखें, तो पर्याप्त नहीं है। जांच की सुविधा को रातों-रात खड़ा नहीं किया जा सकता। इसलिए अभी पूरा जोर ज्यादा से ज्यादा लोगों के इलाज पर होना चाहिए। आपदा प्रबंधन का यही श्रेष्ठ तरीका है। जो जांच व इलाज के संसाधन हैं, उन्हें बहुत ढंग से उपयोग में लाने की जरूरत है, ताकि कम से कम संसाधन में ज्यादा से ज्यादा लोगों को राहत मिले। जांच और इलाज के साथ ही, टीकाकरण भी तेज करने की जरूरत है। एक मई से 18 साल से ज्यादा उम्र के लोगों को भी टीका लगने की शुरुआत हो जाएगी। कुछ राज्यों ने टीके की किल्लत पहले ही बता दी है। केंद्र सरकार ने टीका संग्रहण में जो कामयाबी हासिल की थी, उससे थोड़ी मदद मिल पाएगी, लेकिन केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों से कहा है कि वे अपने स्तर पर ही मान्यताप्राप्त वैक्सीन जुटाने के प्रयास करें। यह तरीका ठीक है, लेकिन दिक्कत कियान्वयन में है। वैक्सीन को लगाने में है। अव्वल, तो जब हम किसी भीड़ भरी जगह पर जाते हैं, तो वहां संक्रमण का खतरा ज्यादा होता है। यह बात हो रही है कि लोग जब टीका लेने अस्पताल जाते हैं और वहां भीड़ रहती है, तो वे खुद को खतरे में डालते हैं। ऐसे में, बहुत जरूरी है कि टीका केंद्रों का हम विकेंद्रीकरण करें। अब टीका केंद्रों को अस्पतालों से अलग करने की भी मांग हो रही है। अभी तक टीकाकरण का कोई ऐसा खतरा सामने नहीं आया है कि टीका लेने के बाद अस्पताल की जरूरत पड़े। टीका केंद्रों को अस्पताल से कुछ दूर रखा जा सकता है। एक बात यह भी ध्यान रखने की है कि अस्पताल में काम करने वाले जो स्वास्थ्यकर्मी हैं, उन्हें टीकाकरण केंद्रों पर बहुत पैमाने पर नहीं भेजा जा सकता। स्वास्थ्यकर्मियों की वैसे ही कमी है, अगर उन्हें अस्पतालों से बाहर तैनात कर दिया जाए, तो अस्पतालों में मरीजों का इलाज मुश्किल हो जाएगा। ऐसे मेडिकल स्टाफ को टीकाकरण में लगाना होगा, जो छोटे या ऐसे केंद्रों पर पदस्थ हैं, जहां मरीजों को भर्ती नहीं किया गया है। अस्पतालों पर दबाव बढ़ाना ठीक नहीं है, उनके दबाव को साझा करने की जरूरत है। बेशक, एक मई से टीका लेने वालों की भीड़ उमड़ सकती है, तो टीका केंद्रों के विकेंद्रीकरण से भीड़ को रोका जा सकता है। टीके के अभाव को दूर करने के लिए भी सरकार ने प्रयास तेज किए हैं। विदेश से वैक्सीन का आयात होना है, साथ ही, देश में उत्पादन बढ़ाने की कोशिशें जारी हैं। कच्चा माल मिलते ही स्वदेशी कंपनियां ज्यादा से ज्यादा टीके बनाने की क्षमता रखती हैं। हमें यह देखना होगा कि एक तरह की आबादी में अलग-अलग तरह के टीके का उपयोग उतना अच्छा नहीं होगा। एक तरह का टीका हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को लगाएं, तो बेहतर है। राज्यों को टीकों की संख्या को लेकर विचलित नहीं होना चाहिए। टीकों की उपलब्धता के हिसाब से ही अभियान चलाने की जरूरत है। राज्यों को अपने उपलब्ध संसाधनों और स्वास्थ्यकर्मियों की सीमित संख्या को देखते हुए अपनी योजना बनानी पड़ेगी। एक और बात आज महत्व की है। अगर किसी को शक है कि उसे संक्रमण हो चुका है, तो वह तत्काल टीका न ले। डॉक्टर भी यही सलाह दे रहे हैं कि कोरोना संक्रमित हुए लोगों को कम से कम तीन महीने तक टीका नहीं लेना चाहिए और पूरी सावधानी से रहना चाहिए।

प्रवीण कुमार सिंह

जस्टिस बोबडे के कार्यकाल में सुप्रीम कोर्ट में एक भी जज की नियुक्ति नहीं हुई

आज किसी नागरिक के संबंध में बेबुनियाद बातों को इंटरनेट मीडिया के माध्यम से प्रचारित करना आम बात हो गई है। लोग अपने एजेंडे के तहत नियोजित लोगों के माध्यम से अनर्गल बातें फैलाते हैं।

इंटरनेट मीडिया का व्यवहार अनियंत्रित रहता है। कई मामलों में इसके माध्यम से समाज में उत्तेजना का माहौल बनाकर विस्फोटक स्थिति बना दी जाती है। उदार ही सही, परंतु किसी कारगर नियामक की आवश्यकता इंटरनेट मीडिया के संदर्भ में आज सभी संवेदनशील नागरिक महसूस कर रहे हैं। उम्मीद है कि बोबडे ने सेवानिवृत्ति के समय अपनी पीड़ा को जिस प्रकार देश के सामने उजागर किया, तंत्र के तीनों अंग विधायिका, न्यायपालिका एवं कार्यपालिका मिलकर उसके निदान का प्रयास करेंगे। इसी से देशहित एवं जनहित सर्वोत्तम रूप से सधेगा।

जस्टिस शरद अरविंद बोबडे पिछले दिनों 17 महीने का अपना कार्यकाल पूरा कर भारत के मुख्य न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्त हो गए। कार्यकाल के अंतिम दिन उन्होंने समीक्षात्मक टिप्पणी करते हुए कहा कि 'मैंने अपना सर्वोत्तम दिया।' उनके इस कथन के दो तरह के अर्थ निकलते हैं। प्रथम, उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में अपने कार्यकाल के प्रति एक संतुष्टि का भाव और दूसरा, परोक्ष रूप से इच्छित कार्य पूरा नहीं कर सकने पर वेदना एवं स्पष्टीकरण का भाव। मुख्य न्यायाधीश के रूप में नामित किए जाने पर बोबडे ने अपनी जो प्राथमिकताएं बताई थीं, उसमें उच्चतर न्यायपालिका में नियुक्तियों को गति प्रदान करना, कुछ कानूनी प्रविधानों के दुरुपयोग को चिन्हित करना और इंटरनेट मीडिया के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार को रेखांकित करना। उनके कार्यकाल पर नजर डाली जाए तो उनकी उक्ति में निराशा का ही भाव दिखता है।

उच्चतम न्यायालय कोलेजियम द्वारा नियुक्तियों की बात करें तो कई वर्षों के बाद बोबडे एक बार फिर ऐसे प्रधान न्यायाधीश बने, जिनके कार्यकाल में उच्चतम न्यायालय में एक भी जज की नियुक्ति नहीं हो पाई। इसका कारण कोलेजियम में बोबडे के साथ अन्य चार जजों में सहमति नहीं बन पाना रहा। इस कारण उच्चतम न्यायालय में रिक्तियां होते हुए एक भी नियुक्ति नहीं हो सकी। इसके पहले मुख्य न्यायाधीश एचएल दत्तू (2015) के समय में न्यायिक नियुक्तियों से संबंधित आयोग अधिनियम पर केंद्र सरकार और कोलेजियम के द्वंद्व के कारण ऐसा नही हो पाया था। उच्चतर न्यायपालिका में नियुक्तियों के संबंध में केंद्र सरकार एवं कोलेजियम के बीच गहरे मतभेद काफी दिनों से चर्चित रहे हैं। इसका मुख्य बिंदु जजों की नियुक्ति से जुड़े अधिकार का रहा है।

पूरी दुनिया से अलग भारतीय न्याय प्रणाली की अनोखी व्यवस्था है कि यहां न्यायाधीश ही न्यायाधीश की नियुक्ति करते हैं। संवैधानिक प्रविधान की बात करें तो अनुच्छेद-124 एवं 227 के अनुसार राष्ट्रपति द्वारा आवश्यकतानुसार भारत के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श के उपरांत उच्चतम एवं उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति की जाती है। न्यायपालिका ने अनुच्छेद-124 एवं 217 का निर्वचन करते हुए कोलेजियम से किए जाने वाले परामर्श एवं उसकी अनुशंसा को लागू करना, दोनों को बाध्यकारी बना दिया। जबकि इन दोनों अनुच्छेदों के मूल पाठ को देखने से ऐसा बिल्कुल प्रतीत नहीं होता।

उच्चतर न्यायपालिका में महिलाओं की अधिक नियुक्तियों पर बोबडे ने कहा कि अब समय आ गया है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश के पद पर किसी महिला को आसीन होना चाहिए। आखिर मुख्य न्यायाधीश के साथ-साथ लंबे समय तक कोलेजियम में रहने के बावजूद बोबडे महिलाओं की हिस्सेदारी क्यों नहीं बढ़ा सके? जब नियोक्ता ही नियुक्ति प्रक्रिया पर प्रश्न उठाएंगे तो आम नागरिक इसे किस रूप में लेंगे? यहां न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता का अभाव दिखता है। हालांकि इसमें दोराय नहीं कि भारतीय शासन प्रणाली में विधायिका एवं कार्यपालिका के कार्यकलाप को पूर्ण रूप से पारदर्शी एवं जवाबदेह बनाने की जिम्मेदारी उच्चतर न्यायपालिका ने बखूबी निभाई है। कई ऐसे अवसर आए कि अगर न्यायपालिका हस्तक्षेप नहीं करती तो शासन-तंत्र में पारदर्शिता एवं जवाबदेही के प्रविधानों एवं मूल्यों की रक्षा नहीं हो पाती, परंतु पारदर्शिता एवं जवाबदेही के ये दोनों पहलू भारतीय उच्चतर न्यायपालिका की कार्यशैली में नजर नहीं आते। आखिर इसके लिए तो न्यायपालिका को स्वनियामक की भूमिका खुद ही निभानी होगी।

जस्टिस बोबडे ने कुछ अन्य चीजों की ओर भी देश का ध्यान आकर्षित किया, जैसे बोलने की स्वतंत्रता, जनहित याचिका, इंटरनेट मीडिया सरीखी संवेदनशील व्यवस्था का खुला दुरुपयोग। सेवानिवृत्ति के दिन उन्होंने बोलने की स्वतंत्रता जैसे मौलिक अधिकार एवं जनहित याचिका जैसी प्रगतिशील न्यायिक व्यवस्था के दुरुपयोग पर चिंता जताई।

उनकी मंशा स्पष्ट दिखती है कि लोग अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों के उपयोग की सकारात्मक सीमा से वाकिफ नहीं होंगे तो प्रजातांत्रिक प्रणाली के लिए खतरा उत्पन्न हो सकता है। आज बोलने की स्वतंत्रता का अर्थ कुछ भी बोलने के रूप में लिया जाता है। बोबडे के कथन का भाव दिखाता है कि बोलने की स्वतंत्रता में आपको क्या बोलने की स्वतंत्रता है एवं क्या नहीं बोलना है, इसका भान भी आवश्यक है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो समाज में विवाद और उपद्रव की आशंका बनी रहेगी।

जनहित याचिका की अवधारणा आवश्यक एवं आकस्मिक लोक महत्व के मुद्दों को लेकर आई थी, मगर आज किसी खास एजेंडे के तहत इसका बढ़ता दुरुपयोग चिंता का विषय है। अदालतों द्वारा भी वर्षों से लंबित मामलों की त्वरित सुनवाई एवं निष्पादन को छोड़ जनहित याचिकाओं का जरूरत से ज्यादा संज्ञान लेने से इस प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है। अतः जनहित याचिकाओं की स्पष्ट मर्यादा एवं परिभाषा होनी चाहिए। आज किसी नागरिक के संबंध में बेबुनियाद बातों को इंटरनेट मीडिया के माध्यम से प्रचारित करना आम बात हो गई है। लोग अपने एजेंडे के तहत नियोजित लोगों के माध्यम से अनर्गल बातें फैलाते हैं।

इंटरनेट मीडिया का व्यवहार अनियंत्रित रहता है। कई मामलों में इसके माध्यम से समाज में उत्तेजना का माहौल बनाकर विस्फोटक स्थिति बना दी जाती है। उदार ही सही, परंतु किसी कारगर नियामक की आवश्यकता इंटरनेट मीडिया के संदर्भ में आज सभी संवेदनशील नागरिक महसूस कर रहे हैं। उम्मीद है कि बोबडे ने सेवानिवृत्ति के समय अपनी पीड़ा को जिस प्रकार देश के सामने उजागर किया, तंत्र के तीनों अंग विधायिका, न्यायपालिका एवं कार्यपालिका मिलकर उसके निदान का प्रयास करेंगे। इसी से देशहित एवं जनहित सर्वोत्तम रूप से सधेगा।

कोरोना के बढ़ते कहर ने स्वास्थ्य व्यवस्था पर नए सिरे से विचार करने के लिए किया मजबूर

समय की मांग है कि विपक्ष इस महामारी के दौरान विभेदकारी राजनीति करने के बजाय एक रचनात्मक भूमिका अपनाए। यह एक युद्ध है, जिसके विरुद्ध सामूहिक रूप से लड़ने की आवश्यकता है।कोरोना के बढ़ते कहर ने स्वास्थ्य व्यवस्था पर नए सिरे से सोचने को मजबूर कर दिया है। इस समय उससे बड़ा हैसियतदार कोई नहीं जो किसी को एक अदद रेमडेसिविर इंजेक्शन दिलवा पाए। जान की सलामती का यह अपूर्व, अनथक संघर्ष कब थमेगा, कोई नहीं जानता। अस्पताल में या तो बेड ही नहीं है, है तो वार्ड में नहीं गलियारे में। बेड है तो रेमडेसिविर नहीं, ऑक्सीजन नहीं। दोनों है तो समय पर देखभाल के लिए डॉक्टर और नर्स नहीं। ऐसे में हिम्मत और शरीर दोनों जवाब दे जाए तो मृत देह को समय पर अग्नि मिलना भी इंजेक्शन जितना ही मुश्किल, यानी अस्पताल से अंतिम पड़ाव तक कहीं सुकून नहीं।

विसंगति कहें या आमजन की नियति कि जब जीवन रेंगने को अभिशप्त है तब राजनीति सरपट दौड़ रही है। दावे-प्रतिदावे, प्रेस कांफ्रेंस, बयानबाजी, रैलियां, जन संपर्क, आमसभा, आरोप-प्रत्यारोप सब बदस्तूर है। कोई कह रहा है कि मेरा हॉस्टल ले लो, कोई कह रहा है हम देंगे रेमडेसिविर, कोई प्लाज्मा का दावा कर रहा है। इंटरनेट मीडिया में संपर्क नंबर रॉकेट की गति से जा रहे हैं तो जरूरतमंद उतने ही वेग और आशा से लबरेज होकर मोबाइल पर अंगुलिया घुमा रहे हैं। हकीकत बेहद निष्ठुर है, जरा मुरव्वत नहीं करती। वह बताती है कि कोई फोन नहीं उठा रहा। ऐसी कोई राहत कहीं से नहीं आ रही, जो दिलों में उमंग जगा दे।

यह भी समझ से परे है कि सरकारी अस्पतालों के मरीजों के लिए इंजेक्शन सरकार जुटा रही है तो क्या निजी अस्पतालों में जीवन-मौत के बीच संघर्ष कर रहे लोग बाहरी हैं? वैक्सीन के उत्पादन और वितरण की विसंगति टीकाकरण के तीन माह बाद भी दूर न होना पीड़ादायक है। यदि विसंगति के बीच 14 करोड़ टीकाकरण हो गया तो व्यवस्था के साथ यह आसानी से 20 करोड़ हो जाता, तो बड़ी राहत होती। अव्वल तो इस समय कोई किसी से बात करने को तैयार नहीं। बात हो जाए तो मानने को तैयार नहीं। पार्षद, विधायक, सांसद, पार्टी पदाधिकारी मुंह फेरकर जा रहे हैं, देख कर भी अनदेखा कर रहे हैं। फोन ज्यादा लगाओ तो बंद कर दिया जाता है, लग जाए तो सुनता कोई और है, बोलता कुछ और है।

फिर भी मेरी दृढ़ मान्यता है कि कोई किसी की उपेक्षा नहीं कर रहा। समय और परिस्थितियां उस चैराहे पर खड़ी हैं, जहां से आगे बढ़ने का ही कोई स्पष्ट संकेत नहीं। यह वो दौर है, जब चाहकर भी कोई किसी की मदद नहीं कर पा रहा, क्योंकि अस्पताल में जगह नहीं, इंजेक्शन नहीं, ऑक्सीजन नहीं और ये सब तुरंत उपलब्ध नहीं कराए जा सकते तो डॉक्टर, प्रशासन, नेता करें भी तो क्या? इस संक्रमण के प्रति जितने लापरवाह हम सब हो गए थे, उससे दस गुना बेफिक्री शासन-प्रशासन को हो गई थी। हम बाजारों में टूट पड़े थे, प्रशासन राजस्व वसूली में तो सत्ताधारी दल अपना दायरा बढ़ाने में और विपक्ष अपनी पकड़ न छूटे, इस जद्दोजहद में लगा रहा।

यदि किसी को लगता है कि कोरोना का खतरा अब गया तो उससे बड़ा कोई नादान नहीं। जो गलती हम सबने मिलकर की, उसे दोहराना आत्मघाती होगा। इसी क्षण से हमें अस्पतालों के निर्माण, उनके रखरखाव, संसाधन जुटाने, बढ़ाने, औषधि की उपलब्धता, ऑक्सीजन के उत्पादन और भंडारण और रेमडेसिविर के निर्माण को तेज करने पर ध्यान देना होगा। टीके का उत्पादन और टीकाकरण की गति को बढ़ाना होगा। यह ऐसा सबक है जिसमें साफ शब्दों में लिखा है कि यदि सेहत के मामले में केवल सरकार के भरोसे रहना है तो अपनी बेहाली के जिम्मेदार आप खुद होंगे। यदि आगामी कुछ वर्षों में कोरोना वायरस को नियंत्रित कर भी लिया गया तो इस बात की गारंटी नहीं है कि भविष्य में कोई नया वायरस सिर नहीं उठाएगा।

बंगाल में हिंसा बंद हो

ममता बनर्जी ने सोमवार को अपने समर्थकों से राजनीतिक हिंसा रोकने की अपील तो की, लेकिन लगे हाथ इसका दोष बीजेपी पर मढ़ दिया, जबकि जरूरत इसे रोकने की साझा अपील करने की है। दोनों ही दलों की ओर से यह पहल होनी चाहिए। उन्हें इस बारे में अपने समर्थकों को स्पष्ट संदेश देना चाहिए।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद राजनीतिक हिंसा का मामला तूल पकड़ गया है, जिसमें अब तक 12 लोगों की मौत हो चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पर और राज्य में बिगड़ती कानून-व्यवस्था को लेकर राज्यपाल जगदीप धनखड़ से बात की है। धनखड़ ने एक ट्वीट करके बताया कि प्रधानमंत्री ने 'राज्य में कानून-व्यवस्था की चिंताजनक हालत पर क्षोभ जताया है।' उन्होंने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी एक ट्वीट टैग करते हुए लिखा है, 'राज्य में जारी हिंसा, लूटपाट और हत्याओं पर मैं अपनी गंभीर चिंता आपसे साझा करता हूं।' केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी बंगाल में राजनीतिक हिंसा पर रिपोर्ट मांगी है और बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा भी वहां हिंसा से पीड़ित पार्टी कार्यकर्ताओं के परिजनों से मिलने पहुंच गए हैं। पश्चिम बंगाल के साथ ही अन्य तीन राज्यों और एक केंद्र शासित क्षेत्र में भी चुनाव नतीजे घोषित हुए। बंगाल को छोड़कर कहीं से भी हिंसा की खबरें नहीं आईं। चुनावों के दौरान हिंसा का मकसद आम तौर पर वोटिंग बिहेवियर को प्रभावित करना होता है।

बंगाल में यह हिंसा राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों द्वारा एक-दूसरे को सबक सिखाने की प्रवृत्ति के रूप में सामने आ रही है। ऐसा नहीं होना चाहिए। अभी तक राजनीतिक हिंसा के लिए दोनों पार्टियां एक दूसरे पर आरोप लगा रही हैं। इसे राजनीतिक रंग दे दिया गया है। ममता बनर्जी ने सोमवार को अपने समर्थकों से राजनीतिक हिंसा रोकने की अपील तो की, लेकिन लगे हाथ इसका दोष बीजेपी पर मढ़ दिया, जबकि जरूरत इसे रोकने की साझा अपील करने की है। दोनों ही दलों की ओर से यह पहल होनी चाहिए। उन्हें इस बारे में अपने समर्थकों को स्पष्ट संदेश देना चाहिए। इस बात को लेकर भी कोई शक नहीं होना चाहिए कि इसे रोकने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। ऐसा करके ममता अपनी प्रशासनिक कुशलता साबित करेंगी। यह भी याद रखना चाहिए कि पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा का लंबा इतिहास रहा है। ममता को अपने इस कार्यकाल में इस धब्बे को भी मिटाने की कोशिश करनी चाहिए। यह भी भूलना नहीं चाहिए कि राज्य में महामारी तेजी से फैल रही है। सरकार को अपनी पूरी ताकत इसे रोकने में लगानी चाहिए। खुद ममता बनर्जी कह चुकी हैं कि उनकी सरकार की प्राथमिकता कोरोना महामारी को काबू में करने की होगी, जो बिल्कुल ठीक है। वह सुनिश्चित करें कि राज्य सरकार अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल इसे रोकने में करे।

बड़े संकट के समय सरकारी इंतजाम कम पड़ जाने की आड़ में क्या देश को करेंगे बदनाम

टीकाकरण शुरू होते ही हल्ला मचाया कि सबको वैक्सीन दो। मकसद सबको सुरक्षित करना बिल्कुल नहीं था। सबको मालूम है कि वैक्सीन उत्पादन में समय लगेगा। ये लोग चाहते थे कि सरकार पर दबाव बनाओ कि सबके लिए एक साथ टीकाकरण हो। टीकाकरण केंद्रों पर अफरातफरी मचे। अब जब सरकार 18 साल से ऊपर वालों के लिए एक मई से टीकाकरण शुरू कर रही है तो कांग्रेस शासित और कुछ अन्य राज्य कह रहे हैं कि हम तो नहीं शुरू कर पाएंगे। क्यों? क्योंकि वैक्सीन कंपनी कह रही है कि 15 मई से पहले टीका नहीं दे पाएंगे। केंद्र और दूसरे राज्यों ने पहले ऑर्डर दिया, ये अब जागे हैं। टीकाकरण के खिलाफ यह जो अभियान चल रहा है, उसका मकसद जो संक्रमित नहीं हैं, उनके मन में डर पैदा करना है।

मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यास गोदान में लिखा है कि सुख के दिन आएं तो लड़ लेना, दुख तो साथ रोने से ही कटता है। दुर्भाग्य से अपने देश में एक ऐसा वर्ग है, जो इस विचार से सहमत नहीं। वह सुख के दिन आने पर रोता है और दुख में लड़ता है। दुख की आहट मात्र से उसका मन मयूर नाचने लगता है। कोरोना की दूसरी लहर का संकट उसके लिए अवसर लेकर आया है। उसका एक ही ध्येय है देश जाए भाड़ में, लेकिन मोदी को गिराने का अवसर नहीं जाना चाहिए। तो अब नई टूलकिट आ गई है। देश और देश के बाहर के मोदी विरोधी अहर्निश सेवा में लगे हैं। अमेरिका में भारत के श्मशान घाटों की फोटो पहले पन्ने पर छप रही हैं। समां ऐसा बांधा जा रहा है जैसे भारत में जिंदा कम और मुर्दों की संख्या ज्यादा है।

जरा कुछ तथ्यों पर गौर कीजिए। अमेरिका की आबादी 33 करोड़ के करीब है। भारत की आबादी 135 करोड़ से ज्यादा है। भारत विकासशील देश है। अमेरिका विकसित और सबसे अमीर देश है। भारत आज भी गांवों में बसता है। अमेरिका पूरी तरह शहरीकृत देश है। दोनों देशों के संसाधनों और स्वास्थ्य सेवाओं की कोई तुलना भी बेमानी होगी, लेकिन उस अमेरिका में कोरोना से पांच लाख 86 हजार लोगों की मौत हो चुकी है। भारत, जिसे गर्त में जाता बताया जा रहा है, वहां यह आंकड़ा दो लाख अब पहुंचा है। अमेरिका, ब्राजील और रूस जैसे देशों के आंकड़ों पर गौर करें तो भारत में प्रति दस लाख आबादी पर मृत्यु दर सबसे कम है। अंतरराष्ट्रीय औसत 395 और भारत में 133 का है। अमेरिका में यह आंकड़ा 1754 है। ये सब बताने का यह मकसद कतई नहीं कि हमारे यहां सब ठीक है और चिंता की कोई बात नहीं।

गत 16 अप्रैल के बाद कोरोना की दूसरी लहर सुनामी की तरह आई। उसके सामने इलाज के सारे प्रबंध नाकाफी साबित हुए। दूसरे किसी भी देश में इतनी तेजी से इतने कम समय में संक्रमण नहीं बढ़ा। दो-तीन तरह की चूक हुई हैं। सितंबर के बाद जब कोरोना के केस बहुत कम हो गए तो हम गाफिल हो गए। मान लिया कोरोना चला गया। जनवरी आते-आते तमाम विशेषज्ञ कहने लगे कि भारत हर्ड इम्युनिटी की तरफ बढ़ रहा है। पहली लहर के समय केंद्र सरकार की इसे लेकर आलोचना हुई कि उसने सब कुछ केंद्रीकृत कर दिया है। राज्यों के हाथ बांध दिए हैं। केंद्र ने जनवरी के बाद मुख्यमंत्रियों को राज्य की जरूरत और स्थिति के अनुसार फैसले लेने की छूट दे दी। केंद्र ने 162 ऑक्सीजन प्लांट लगाने के लिए राज्यों को पैसा दे दिया, पर राज्यों ने ध्यान नहीं दिया और न ही बड़े निजी अस्पतालों ने। जिन अस्पतालों ने पहली लहर में खूब कमाया था, उन्होंने भी समय रहते ऑक्सीजन प्लांट लगवाने की आवश्यकता नहीं समझी। इस वक्त ऑक्सीजन के लिए सबसे ज्यादा हाहाकार निजी अस्पतालों में ही है।

किसी भी बड़े संकट के समय सरकारों के इंतजाम हमेशा कम पड़ जाते हैं। इसके लिए उनकी आलोचना में हर्ज नहीं है, पर क्या इसकी आड़ में देश को बदनाम भी करेंगे? लेफ्ट-लिबरल गैंग किस स्तर पर सक्रिय है, इसके लिए एक छोटा सा उदाहरण शायद काफी होगा। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर पैट कमिंस और ब्रेट ली ने पीएम केयर्स फंड में पैसा दिया। उन्होंने कहा कि वे भारत से प्यार करते हैं। उनके ऐसा करते ही उनके खिलाफ अभियान शुरू हो गया। बाकायदा ट्वीट करके उनसे यहां तक कहा गया कि इसमें पैसा मत डालिए। इससे तो भाजपा का चुनाव अभियान चलता है। आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या किसी और देश में सरकार का बड़े से बड़ा विरोधी भी ऐसी बात कह सकता है?

मोदी सरकार की सात सालों की विदेश नीति और संकट के समय दूसरे देशों की मदद का नतीजा है कि आज अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और रूस सहित तमाम देश भारत की मदद के लिए तत्पर हैं। इन लोगों से यह भी बर्दाश्त नहीं हो रहा। कहा जा रहा है कि अमेरिका तो इसलिए तैयार हुआ कि चीन और रूस ने मदद का प्रस्ताव दिया। भारतीय वैक्सीन के लिए कच्चा माल देने का आदेश बाइडन प्रशासन ने इसलिए दिया कि पहली लहर के समय भारत ने अमेरिका को हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन सहित दूसरी तमाम दवाइयां मुहैया करवाई थीं।

अमेरिकी प्रशासन ने इसे स्वीकार किया। अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों का प्रभाव और अमेरिकी संसद के बहुत सारे सदस्यों के दबाव ने भी काम किया, पर यह सब मानने से मोदी पर हमला कमजोर पड़ता। इसलिए डिनायल मोड में चले जाओ और चीन की प्रशंसा करो।

चीन तमाम संसाधन और वायरस के बारे में सबसे ज्यादा जानकारी होने के बावजूद एक कायदे की वैक्सीन नहीं बना पाया। भारत ने उससे कम समय में दो-दो वैक्सीन बना लीं। एक अपनी और एक अंतरराष्ट्रीय मदद से। वैक्सीन आई तो कहा कि यह भाजपाई वैक्सीन है। लोगों के मन में संदेह पैदा कर दिया। नतीजतन टीकाकरण का अभियान धीमा हो गया। इसके लिए भी सरकार को जिम्मेदार ठहरा दिया गया।

टीकाकरण शुरू होते ही हल्ला मचाया कि सबको वैक्सीन दो। मकसद सबको सुरक्षित करना बिल्कुल नहीं था। सबको मालूम है कि वैक्सीन उत्पादन में समय लगेगा। ये लोग चाहते थे कि सरकार पर दबाव बनाओ कि सबके लिए एक साथ टीकाकरण हो। टीकाकरण केंद्रों पर अफरातफरी मचे। अब जब सरकार 18 साल से ऊपर वालों के लिए एक मई से टीकाकरण शुरू कर रही है तो कांग्रेस शासित और कुछ अन्य राज्य कह रहे हैं कि हम तो नहीं शुरू कर पाएंगे। क्यों? क्योंकि वैक्सीन कंपनी कह रही है कि 15 मई से पहले टीका नहीं दे पाएंगे। केंद्र और दूसरे राज्यों ने पहले ऑर्डर दिया, ये अब जागे हैं। टीकाकरण के खिलाफ यह जो अभियान चल रहा है, उसका मकसद जो संक्रमित नहीं हैं, उनके मन में डर पैदा करना है। यह अभियान चलाने वालों को अपने आत्मसम्मान की चिंता तो नहीं ही है। उन्हें देश और समाज के आत्मसम्मान की भी चिंता नहीं है। ऐसे लोग इस दंभ में जीते हैं कि सिर्फ वे ही सब समझते हैं। हरिशंकर परसाई कहते हैं कि यह अहसास आदमी को नासमझ बना देता है। अब ये नासमझ हैं या नासमझी की ओट में एजेंडा चलाने वाले, आप ही तय कीजिए।

गौरवशाली भारत के स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91 से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI, No. DELHIN383334, E-mail: gauravashalibarat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

कोरोना वायरस से संक्रमित भाजपा विधायक दल बहादुर कोरी का निधन

रायबरेली । वैश्विक महामारी कोरोना वायरस का संक्रमण सत्ता पर काबिज भारतीय जनता पार्टी के विधायकों के लिए बेहद ही घातक होता जा रहा है। बीते पन्द्रह दिन में भााजपा के चार विधायकों का कोरोना संक्रमण के कारण निधन हुआ है। दल बहादुर कोरी से पहले लखनऊ पश्चिम से भाजपा विधायक सुरेश कुमार श्रीवास्तव, औरैया सदर से भाजपा विधायक रमेश चंद्र दिवाकर और बरेली के नवाबगंज से भाजपा के विधायक केसर सिंह गंगवार ने कोरोना संक्रमण के कारण दम तोड़ दिया था। यह सभी जिला पंचायत के चुनाव में बेहद सक्रिय थे।

रायबरेली के सलोन से भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल बहादुर कोरी बीते दिनों कोरोना वायरस के संक्रमण की चपेट में थे। पंचायत चुनाव के दौरान बेहद सक्रिय रहे दल बहादुर कोरी का शुक्रवार को निधन हो गया। इससे पहले भाजपा के तीन विधायकों का चार दिन के अंतराल पर कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण निधन हो गया था। भारतीय जनता पार्टी से अपनी राजनीतिक पारी शुरू करने वाले दल बहादुर कोरी बसपा के साथ कांग्रेस में भी गए, लेकिन फिर भाजपा में वापसी की 2019 लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने अमेठी में स्मृति ईरानी को जीताने में बड़ी भूमिका अदा की थी।

यही कारण है कि स्मृति ईरानी के बेहद करीबी लोगों में दल बहादुर भी शामिल थे। 64 साल के दल बहादुर कई दिनों से कोरोना से संक्रमित थे। पिछले 19 अप्रैल को ही लखनऊ के पीजीआई हॉस्पिटल ने उन्हें कोरोना से मुक्त बताते हुए डिस्चार्ज कर दिया था। हालात खराब होने पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की मदद से अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां पिछले 7 दिनों से वह वेंटिलेटर पर थे।

भाजपा विधायक दल बहादुर कोरी का लखनऊ के अपोलो अस्पताल में इलाज चल रहा था। रायबरेली के सलोन विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक दलबहादुर कोरी का शुक्रवार की सुबह कोरोना से निधन हो गया।

करीब एक माह से बीमार विधायक का लखनऊ स्थित अपोलो अस्पताल में इलाज चल रहा था। विधायक के निधन से शोक की लहर दौड़ गई है।बताया गया की उन्हें कोरोना हुआ था, पीजीआई में भर्ती कराये गये थे । रिपोर्ट निगेटिव आने पर अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। दोबारा फिर तबीयत खराब हुई। जांच कराई गई तो रिपोर्ट पाज़िटिव आई। इसके बाद परिजनों ने अपोलो में भर्ती कराया था।

प्रदेश सरकार में मंत्री रहे, स्मृति ईरानी की जीत में अहम भूमिका॰ दल बहादुर कोरी पहली बार 1993 में विधायक बने थे। इसके बाद 1996 में दूसरी बार जीत हासिल करके वह राजनाथ सिंह के मुख्यमंत्री काल में राज्य मंत्री बने। 2004 में दल बहादुर कांग्रेस में शामिल हो गए थे।

हालांकि 2014 में वह फिर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे। 2017 विधानसभा चुनाव में उन्होंने शानदार जीत हासिल की। 2019 लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने अमेठी में स्मृति ईरानी को जीताने में बड़ी भूमिका अदा की थी। यही कारण है कि स्मृति ईरानी के बेहद करीबी लोगों में दल बहादुर भी शामिल थे।

बाराबंकी में हार से बौखलाए प्रधान ने खुदवा दी आठ वर्ष पहले बनवाई सड़क

बाराबंकी । उत्तर प्रदेश में गांव की सरकार के गठन के लिए सम्पन्न पंचायत चुनाव के दो मई से तीन मई तक आए परिणाम के बाद हिंसा की वारदातों के बीच में सूबे की राजधानी लखनऊ से सटे बाराबंकी में अनोखा मामला सामने आया है। यहां पर हार से बौखलाए पूर्व प्रधान ने आठ वर्ष पहले बनवाई गई सड़क को जेसीबी लगवाकर खुदवा दिया। पूर्व प्रधान के इस कृत्य से ब्लाक में खलबली मची है। एसडीएम हैदरगढ़ से शिकायत की गई है।

पंचायत चुनाव में जीत दर्ज करने वाले लोग तो जश्न मनाने में लगे हैं जबकि हारे प्रत्याशी अपनी खीझ मिटा रहे हैं। कई जगहों पर हिंसा के साथ बवाल के मामले सामने आए हैं। इसी बीच पराजित प्रत्याशी जनता पर अपनी हार का गुस्सा निकालने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे हैं। बाराबंकी के सुबेहा ब्लाक के रोहना मीरपुर ग्राम पंचायत के अहिरन सरैया गांव में ग्राम प्रधान पद के चुनाव में तीसरे नम्बर पर आने वाले प्रत्याशी ने आठ वर्ष पहले बनवाई गई सड़क को करीब दो सौ मीटर तक खोदवा दिया। यह सड़क उसने अपनी प्रधान निधि से बनवाई थी। सड़क की खोदाई करवाने के लिए उसने जेसीबी लगवा दी थी।

बाराबंकी में विचित्र तरह का प्रकरण सामने आया है। यहां हार के बाद पूर्व प्रधान ने जेसीबी से गांव की सड़क खुदवा दी। आठ वर्ष पहले इस सड़क का निर्माण आरोपी प्रधान के कार्यकाल में ही हुआ था। करीब दो सौ मीटर सड़क खोदे जाने से आहत ग्रामीणों ने इसकी शिकायत अधिकारियों से की है। बाराबंकी के थाना सुबेहा अंतर्गत रोहना मीरपुर ग्राम पंचायत के अहिरन सरैया गांव में प्रधानी का चुनाव हारने पर आरोपी ने आठ वर्ष पूर्व बनवाई सड़क को जेसीबी की मदद से उखड़वा दिया। गांव के पूर्व प्रधान कृपा शंकर तिवारी ने बताया कि इस चुनाव में आरोपी पूर्व प्रधान दीपक तीवारी तीसरे नंबर पर आए तो उन्होंने अपने समर्थकों के साथ सड़क खुदवा डाली। इस बार यहां साइना गांव के ग्राम प्रधान रामबाबू शुक्ला प्रधान बने हैं। दीपक यहां तीसरे नंबर पर आने से नाराज हो गए। ग्रामीणों के मुताबिक यह सड़क लगभग 200 मीटर की थी।

अहिरनपुरवा के जगदंबा, रामदेव व गोबरे का कहना है कि चकमार्ग बना था। ग्राम पंचायत रोहना मीरापुर के पूर्व प्रधान दीपक तिवारी ने 200 मीटर चकमार्ग जेसीबी से खोदवा दिया। ग्राम प्रधान रामबाबू शुक्ल का कहना है कि दीपक तिवारी इस बार पंचायत चुनाव में प्रधान पद पर हार गए। इससे नाराज होकर चकमार्ग खोदवा दिया। इससे आवागमन में परेशानी हो गई है।

संक्षिप्त खबर

ललन सिंह की चुनौती-खोल दूंगा पोल, केवल मुकेश सहनी ने की थी मांग

पटना । लॉकडाउन के सवाल पर जदयू का हमला जारी है। लोकसभा में जदयू संसदीय दल के नेता राजीव रंजन सिंह ऊर्फ ललन सिंह ने कहा कि कुछ दलों के नेताओं का यह दावा गलत है कि राज्यपाल की ओर से बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में तुरंत लॉकडाउन की सलाह दी गई थी। उन्होंने गुरुवार को यहां कहा-विकासशील इंसान पार्टी के अध्यक्ष मुकेश सहनी को छोड़ कर किसी नेता ने संपूर्ण लॉकडाउन की मांग नहीं की थी।

लॉकडाउन लगा जरूरी तो लगाया- सिंह ने कहा कि वे सर्वदलीय बैठक की प्रोसीडिंग जारी करने को तैयार हैं। विपक्ष के नेता तेजस्वी प्रसाद यादव और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने वीकेंड कर्फ्यू लगाने की सलाह दी थी। मतलब, शुक्रवार की शाम से सोमवार सुबह तक नागरिक गतिविधियों पर रोक। उस समय की स्थिति के अनुसार सरकार ने नाइट कर्फ्यू लागू किया। समीक्षा के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने लॉकडाउन की घोषणा की। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. मदन मोहन झा ने बैठक में कोई विशेष राय नहीं दी, जबकि इसी पार्टी के एक नेता सरकार की आलोचना कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने जब देखा कि कोरोना के प्रसार को रोकने के लिए लॉकडाउन जरूरी है, उन्होंने इसे लागू कर दिया।

पिता के रास्ते पर चल रहे तेजस्वी- जदयू नेता ने कहा कि तेजस्वी प्रसाद यादव कुछ और नहीं, अपने पिता राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद के रास्ते पर चल पड़े हैं। लालू प्रसाद बिना कुछ काम किए सिर्फ भावना भड़का कर शासन करते रहे। लालू प्रसाद और राबड़ी देवी के 15 वर्षों के शासन में राज्य की आधारभूत संरचनाएं ध्वस्त हो गई। सरकारी अस्पतालो की हालत उसी समय खराब हुई, जिसे नीतीश सरकार ने दुरुस्त किया। संकट के इस दौर में तेजस्वी का अता पता नहीं है। ये लापता हैं। उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद और उनके परिवार के दूसरे सदस्यों को कभी राज्य के विकास से मतलब नहीं रहा है।

बिहार में 18 प्लस वालों को वैक्सीन कब तक, सरकार को खुद ही नहीं पता

पटना । वैक्सीन की उपलब्धता नहीं हो पाने की वजह से बिहार में 18 से अधिक उम्र के लोगों के टीकाकरण को लेकर संशय बरकरार है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी नियमित सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया और भारत बायोटेक के अधिकारियों के साथ संपर्क में हैं, लेकिन दोनों संस्थानों ने अब तक संकेत नहीं दिए हैं कि राज्य को कोविशील्ड और को-वैक्सीन की पहली खेप कब तक मिल पाएगी। स्वास्थ्य विभाग ने अप्रैल महीने की 18 तारीख को ही एक करोड़ वैक्सीन की आपूर्ति का ऑर्डर सीरम इंस्टीट्यूट को दिया था। कमोबेश सभी राज्यों ने एक साथ सीरम और भारत बायोटेक को अपने-अपने राज्य के लिए वैक्सीन की आपूर्ति का ऑर्डर किया। नतीजा सीरम ने एक साथ सभी राज्यों को आपूर्ति देने से इंकार कर दिया और सभी राज्यों से महीने की खपत के अनुसार ऑर्डर मांगे। इसके बाद स्वास्थ्य विभाग ने सीरम इंस्टीट्यूट को 11.89 लाख और भारत बायोटेक को 4.12 लाख डोज के ऑर्डर दिए। एक मई को दोनों संस्थानों को वैक्सीन की कीमत भी अदा की जा चुकी है। स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों ने बताया कि भुगतान होने के बाद भी दोनों संस्थानों ने वैक्सीन मिलने की कोई संभावित तिथि नहीं बताई है। सूत्र बताते हैं कि उम्मीद है कि 15-20 मई के बीच बिहार को वैक्सीन की 16 लाख डोज मिलने की संभावना है। वैक्सीन प्राप्त होते ही 18 से अधिक उम्र के लोगों का टीकाकरण अभियान प्रारंभ हो जाएगा।

विभागीय सूत्रों ने बताया कि 18 से अधिक उम्र वाले टीकाकरण के लिए नियमित अपना पंजीकरण करा रहे हैं। उन्हें फिलहाल सिर्फ पंजीकरण हो जाने की जानकारी एसएमएस के जरिए भेजी जा रही है। वैक्सीन की खेप प्राप्त होते ही पंजीकरण कराने वालों को उनके पंजीकरण के क्रमवार टीकाकरण की तिथि और केंद्र की जानकारी भेजी जाएगी। इस मसले पर स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि सरकार के अधिकारी नियमित रूप से वैक्सीन प्राप्त करने के प्रयास कर रहे हैं। उम्मीद है जल्द ही बिहार को पहली खेप मिल जाएगी और इसके बाद ही टीकाकरण की तिथि निर्धारित की जा सकेगी। पहली खेप में बिहार को 16 लाख वैक्सीन के डोज मिलेंगे।

इस हाल में कोरोना वायरस से कैसे लड़ेगा पंजाब, छह जिलों में एक भी वेंटिलेटर नहीं

चंडीगढ़ । विशेषज्ञ कोरोना की तीसरी लहर आने की चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन पंजाब सरकार की तैयारियां दूसरी लहर के लिए भी पर्याप्त नहीं हैं। कोरोना को पंजाब में दस्तक दिए एक साल से ज्यादा समय हो चुका है, लेकिन अभी तक वेंटिलेटर और बेड जैसी सुविधाएं भी पूरी नहीं हैं। राज्य सरकार भले ही बड़े-बड़े दावे कर रही हो, लेकिन हकीकत यह है कि टेक्निकल स्टाफ न होने के कारण छह जिलों में वेंटिलेटर या तो दूसरे जिलों में शिफ्ट कर दिए गए हैं या प्राइवेट अस्पतालों को सौंप दिए गए हैं। इन जिलों में 1231 लोगों की कोरोना की वजह से मौत हो चुकी है। वहीं, 17 जिलों में लेवल-थ्री का एक भी बेड नहीं है।

टेक्निकल स्टाफ न होने के कारण दूसरे जिलों व प्राइवेट अस्पतालों को शिफ्ट किए- संगरूर, रोपड़, पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के गृह जिले श्री मुक्तसर साहिब, बरनाला, मानसा के अलावा बादल सरकार में स्वास्थ्य मंत्री रहे सुरजीत कुमार ज्याणी के गृह जिले फाजिल्का में एक भी वेंटिलेटर नहीं है, जबकि फाजिल्का में ही पांच मई को 317 और मुक्तसर में 268 पाजिटिव केस सामने आए। मुक्तसर में 183 और फाजिल्का में 178 मरीजों की मौत हो चुकी है। पांच दिन पहले तक राज्य में 2119 वेंटिलेटर एक्टिव थे, जिसमें से तीनों मेडिकल कालेज और छह सरकारी जिला अस्पतलों में 673 वेंटिलेटर थे। वहीं, 1446 वेंटिलेटर प्राइवेट अस्पतालों में थे। चार दिन पहले 809 वेंटिलेटर जिलों को मुहैया करवाए गए, लेकिन इन्हें चलाने के लिए जिला अस्पतालों के पास न तो टेक्निकल स्टाफ है और न ही आधारभूत ढांचा। इसलिए ये प्राइवेट अस्पतालों को दे दिए गए।

कोरोना कर्फ्यू का बड़ा असर, नए संक्रमित केसों में कमी; 24 घंटे में 353 ने तोड़ा दम

लखनऊ । वैश्विक महामारी कोरोना वायरस संक्रमण की तेजी से बढ़ती लहर अब कुछ कम हो रही है। प्रदेश में दस मई तक के कोरोना कर्फ्यू का बड़ा असर अब देखने को मिल रहा है। प्रदेश में बीते 24 घंटे में 26780 नए संक्रमित मिले हैं जबकि 353 लोगों ने दम तोड़ा है। पहले नए संक्रमितों की संख्या 30 हजार के ऊपर ही रहती थी।

प्रदेश में बीते 24 घंटे की जो टेस्ट रिपोर्ट मिली है, उसके अनुसार 26780 नए संक्रमित मिले हैं। इसके विपरीत 28902 लोग इसके संक्रमण से उबरे हैं। इनमें डिप्टी सीएम डॉ. दिनेश शर्मा तथा उनकी पत्नी डॉ. जयश्री शर्मा भी हैं। प्रदेश में बीते पांच दिन में एक्टिव केस में करीब 50 हजार की कमी आई है। 30 अप्रैल को 3,10,783 सक्रिय मामले थे, जो अब 2,59,844 हैं। प्रदेश में बीते 24 घंटे में 2,25,670 सैंपल्स की जांच की गई। अब तक प्रदेश में कुल 4,22,58,378 सैंपल्स की जांच की गई हैं।

राजधानी लखनऊ में भी नए संक्रमित कम होते जा रहे हैं, लेकिन मृत्यु का ग्राफ बढ़ा है। लखनऊ में बीते 24 घंटे में 1865 नए संक्रमित मिले हैं। यहां पर कुल 26827 एक्टिव केस हैं जबकि बीते 24 घंटे में 3755 लोगों को संक्रमण से मुक्ति मिली है। लखनऊ में 24 घंटे में 65 लोगों ने दम तोड़ा है। लखनऊ के बाद कानपुर में 49 लोगों की मौत हुई है, यहां 24 घंटे में 782 नए संक्रमित मिले हैं। मुजफ्फरनगर में 21 लोगों की मृत्यु हुई तो 704 नए केस मिले हैं। गाजियाबाद में 953 नए केस मिले तो 15 लोगों ने दम तोड़ा है। गौतमबुद्धनगर में 13 लोगों का निधन हो गया, जहां पर 1227 नए संक्रमित सामने आए हैं। मेरठ व झांसी में 12-12 लोगों की मौत हो गई। मेरठ में 1167 तो झांसी में 717 नए संक्रमित मिले हैं। वाराणसी व प्रयागराज में अब स्थिति काफी सुधरी है। गोरखपुर में 24 घंटे में 991 नए संक्रमित मामले सामने आए हैं जबकि यहां पर चार लोगों की मौत हुई है।

अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि प्रदेश में कोरोना कर्फ्यू का बड़ा असर देखने को मिल रहा है। प्रदेश में सभी जगह पर सैनिटाइजेशन का काम हो रहा है, जबकि बाहर न निकलने के कारण लोग एक-दूसरे के सम्पर्क में भी नहीं आ पा रहे हैं। इसके साथ ही कोविड बेड की संख्या में भी लगातार बढ़ोतरी की जा रही है।

वैक्सीनेशन जारी॰ अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि प्रदेश में अब तक कुल मिलाकर 1,06,65,499 लोगों को वैक्सीन की पहली डोज दी गई है। इसके साथ ही 25,90,456 लोगों को वैक्सीन की दूसरी डोज लगाई गई है। इन दिनों 18-45 आयु वर्ग के लोगों को भी वैक्सीन दी जा रही है। इसका लाभ 68,536 लोगों को मिला है। उद्योगों में कोविड केयर सेंटर॰ अपर मुख्य सचिव सूचना नवनीत सहगल ने बताया कि प्रदेश के उद्योगों में कोविड केयर सेंटर बनाए जा रहे हैं। लगभग 544 उद्योगों में कोविड केयर सेंटर बना दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया है कि निर्माण संबंधित गतिविधियां जैसे हाईवे, एक्सप्रेस-वे, बड़े आइसिंग प्रोजेक्ट में काम नहीं रुकना चाहिए।

लॉकडाउन में ऑटो में रख कॉलोनियों में बेच रहे थे शराब, आगरा में तीन गिरफ्तार

आगरा । शराब के शौकीनों के लिए इस धंधे से जुड़े लोग कोई न कोई जुगाड़ या तरीका खोज ही लेते हैं। कोरोना कर्फ्यू में अंग्रेजी और देशी शराब की दुकानों पर पहरा सख्त हो गया। अवैध शराब की बिक्री करने वालों ने इसका रास्ता तलाश लिया। उन्होंने आटो में देशी शराब के पव्वे रखकर उनकी फेरी लगाकर बेचना शुरू कर दिया। पॉश कालोनियों से लेकर बस्ती और गांव तक शराब के शौकीनों तक होम डिलीवरी शुरू कर दी। आगरा के कमला नगर थाने की पुलिस ने चेकिंग के दौरान आटो से फेरी लगाकर देशी शराब की होम डिलीवरी करने वाले गैंग के पर्दाफाश किया। आटो समेत तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपितों से देशी शराब के 270 पव्वे बरामद किए। आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

इंस्पेक्टर कमला नगर नरेंद्र शर्मा ने बताया कि गुरुवार की सुबह पुलिस टीम मनोहरपुर गांव में गश्त पर थी। इसी दौरान एक आटो में सवार तीन लोगों को रोका। उन्होंने मास्क भी नहीं लगाया था। इंस्पेक्टर के अनुसार पूछताछ करने पर आरोपितों ने अपना नाम धन सिंह निवासी गांव जपावली धौलपुर, राजेश कुमार निवासी गांव घुरकुआ नगला सिंघी फीरोजाबाद और रविंद्र निवासी गांव कोयला थाना अल्लागंज शाहजहांपुर बताया। आरोपितों का कहना था कि कि वह पुष्पांजलि सिटी समेत आसपास की कालोनियों में शराब के शौकीन लोगों को फेरी लगाकर बेचते हैं। आरोपितों से देशी शराब के 270 पव्वे बरामद किए हैं। तीनों के खिलाफ आबकारी अधिनियम व महामारी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है।

एक पव्वे पर पांच से दस रुपये तक ज्यादा लेते थे- फेरी लगाकर देशी शराब बेचने के आरोपितों ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि वह ग्राहक की जरूरत के अनुसार उससे कीमत वसूलते थे। यह कीमत पांच से दस रुपये तक होती थी। देशी शराब वह राजस्थान और हरियाणा से लेकर आते थे। वहां यहां की तुलना में सस्ती कीमत पर देशी शराब मिलती है।

गोरखपुर में दंगाइयों के बीच घंटों फंसे रहे एएसपी व सीओ, फेल रहा खुफियातंत्र

गोरखपुर । नई बाजार चौराहा पर बुधवार को जिला पंचायत सदस्य रवि निषाद व कोदई के प्रदर्शन करने की जानकारी होने पर एसडीएम चौरीचौरा और सीओ फोर्स के साथ पहुंचे। एक घंटे तक बातचीत चली लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। दोनों अधिकारी भीड़ को संभाल नहीं पाए और न ही यह आकलन कर पाए की बवाल बढ़ेगा। जिले का खुफियातंत्र भी पूरी तरह से फेल रहा। तोड़फोड़ व आगजनी शुरू होने पर जिले के अधिकारियों को घटना की जानकारी हुई। इस बीच दंगाइयों के बीच एएसपी व सीओ घंटों फंसे रहे। सी

तीन घंटे तक पुलिस व प्रशासन के बैकफुट पर होने से बढ़ा हौसला- मतदान व मतगणना के दौरान कहीं बवाल न हो इससे निपटने के लिए पुलिस व प्रशासन ने ब्यापक स्तर पर तैयारी की थी। मतगणना स्थल पर एलआइयू (लोकल इंटेलीजेंस यूनिट) की भी ड्यूटी लगी थी लेकिन यह कागज में ही रह गई। सीओ व इंस्पेक्टर कहीं नजर नहीं आए। बुधवार की दोपहर नई बाजार में बवाल होने की सूचना मिलने के बाद भी जिले के अधिकारी तीन घंटे तक खामोश रहे। पुलिस चौकी में आग लगाने की खबर मिलने पर फोर्स को आनन-फानन में नई बाजार भेजा गया। बिना तैयारी के पहुंची फोर्स पर उपद्रवियों की भीड़ हावी हो गई। पुलिस के साथ ही पीएसी को बैकफुट पर आना पड़ा। शाम सात बजे के बाद स्थिति नियंत्रित हुई लेकिन तब तक बहुत नुकसान हो

चुका था।

वीरेंद्र की काल डिटेल से खुलेंगे कई राज- जिला पंचायत सदस्य की मतगणना में हेराफेरी करने वाले अधिशासी अभियंता वीरेंद्र कुमार यादव के मोबाइल काल डिटेल की पुलिस जांच करेगी। ब्रह्मपुर ब्लाक की मतगणना शुरू होने से एक दिन पहले और समाप्त होने तक वीरेंद्र ने किससे बातचीत की इसे विवेचना में शामिल किया जाएगा। संदेह है कि अधिशासी अभियंता ने जिन हारे हुए प्रत्याशियों को विजेता बताया था उनके संपर्क में पहले से ही था। जानबूझकर उसने यह कृत्य किया।

भीड़ को पुलिस के खिलाफ किसने उकसाया-प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर रहे जिला पंचायत सदस्य व उनके समर्थकों का आक्रोश अचानक पुलिस पर फूट पड़ा। भीड़ में शामिल कुछ लोग नारेबाजी करते हुए पुलिस चौकी की ओर बढ़े तो उनके पीछे पूरा हुजूम चल पड़ा। पुलिसकर्मियों ने रोकने की कोशिश की तो पथराव व आगजनी शुरू कर दी। पुलिस भीड़ को उकसाने वाले लोगों को चिन्हित करने में जुटी है।

ब्लाक में फंसे थे एडिशनल एसपी व सीओ- दोपहर में ब्लाक का घेराव होने की सूचना पर एसडीएम चौरीचौरा के साथ सीओ वहीं पहुंचे। बातचीत में समाधान न निकलने पर एसपी नार्थ फोर्स के साथ पहुंच गए। भीड़ के आक्रामक होने पर अधिकारी ब्लाक में ही फंस गए।पुलिसकर्मी अधिकारियों के साथ ही ब्लाक कर्मचारियों की सुरक्षा में लग गए। इस बीच उपद्रवी नई बाजार पुलिस चौकी पहुंच गए।

लगेगा गैंगस्टर व रासुका- पुलिसकर्मियों पर जानलेवा हमला करने, चौकी में आगजनी व डकैती करने वाले आरोपितों के खिलाफ गैंगस्टर व रासुका की कार्रवाई होगी। एसएसपी दिनेश कुमार पी ने बताया कि कानून तोड़ने वाले बख्शे नहीं जाएंगे।

हाथरस में सपा नेता की बैटरी फैक्ट्री में लगी भीषण आग, अफरा तफरी, लाखों का नुकसान

हाथरस । उत्तर प्रदेश जनपद हाथरस के सादाबाद में शुक्रवार की सुबह सपा नेता की बैटरी फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। इससे आसपास के लोगों में खलबली मच गई। अज्ञात कारणों से लगी आग के कारण चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई। एक साथ भयानक रूप से लगी आग से बस्ती के लोग फैक्ट्री की तरफ भागे। लेकिन आग इतनी विकराल रूप से लगी हुई थी कि काबू नहीं पाया जा सका। मौके पर पहुंची। दमकल की 3 गाड़ियों के द्वारा दमकल कर्मियों तथा स्थानीय लोगों के सहयोग से डेढ़ घंटे के बाद आग पर काबू पाया जा सका।

समाजवादी पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष चौ.भाजुद्दीन एवं जिला महासचिव जैनुद्दीन चौधरी की ईदगाह कॉलोनी में बैटरी की फैक्ट्री है। यहां बड़े पैमाने पर बैटरी बनाने का काम किया जाता है। नीचे की मंजिल पर बैटरी की प्लेट आदि बनाने की मशीन लगी हुई हैं। जबकि ऊपरी मंजिल पर पैकिंग का पूरा सामान रखा हुआ है, जिसमें थर्माकोल कार्टून व अन्य सामग्री रखी हुई थी।

शुक्रवार की सुबह अचानक ही ऊपरी मंजिल से काला धुआं निकलना प्रारंभ हुआ। पड़ोस के लोगों ने देखा तो तत्काल सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष को जानकारी दी गई। तब तक पास पड़ोस के लोग समरसेबल का पाइप लेकर आग बुझाने को तैयार हो गए। जैसे ही फैक्ट्री मालिक सपा नेता फैक्ट्री पर पहुंचे, ताला खोलकर नीचे देखा तो नीचे कुछ नहीं था। ऊपरी मंजिल पर आग लगी हुई थी। जानकारी प्रशासनिक स्तर पर दी गई। मौके पर एसडीएम राजेश कुमार पहुंच गए।

एसडीएम ने स्थिति को देखते ही तत्काल दमकल कर्मियों को जानकारी दी। जानकारी मिलते ही दमकल की 3 गाड़ियां मौके पर पहुंची। आग ऊपरी मंजिल पर लगी हुई थी। इसलिए दमकल कर्मियों को भी आग बुझाने में खासी दिक्कत का सामना करना पड़ा। नीचे से आग किसी भी प्रकार से नहीं बुझ पा रही थी। आखिरकार दमकल कर्मियों को ऊपरी मंजिल पर जाना पड़ा। इधर बैटरी फैक्ट्री में आग लगने की जानकारी लोगों को होने पर सैकड़ों की संख्या में लोग जुट गये। बहरहाल डेढ़ घंटे के प्रयास के बाद आग पर काबू पा लिया, लेकिन ऊपरी मंजिल पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी थी।आग के कारण सपा नेता का करीब 25 लाख के नुकसान की आशंका है।

कांग्रेस सांसदों की सलाह, पंजाब में ऑक्सीजन प्लांट लगाने पर खर्च की जाए सांसद निधि

चंडीगढ़ । पंजाब में कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों के बीच पंजाब से कांग्रेस के लोकसभा और राज्यसभा सदस्यों ने मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह से तीन घंटे की बैठक की। बैठक में ऑक्सीजन सहित वैक्सीन और दवाओं की कमी को लेकर चर्चा की गई। इसके बाद राज्यसभा और लोकसभा सदस्यों ने कहा कि उनकी सांसद निधि का प्रयोग सरकारी अस्पतालों में आक्सीजन उत्पादन प्लांट स्थापित करने के लिए किया जाए। ताकि, पड़ोसी राज्यों से पंजाब आकर इलाज करवाने वाले मरीजों के कारण बढ़ी ऑक्सीजन की मांग पूरी की जा सके।

कोरोना के बढ़ते मामलों के मुद्दे पर कांग्रेस सांसदों ने सीएम कैप्टन अमरिंदर को बैठक में दी सलाह- कैप्टन अमरिंदर ने कहा कि पंजाब आक्सीजन, टैंकरों, वैक्सीन और दवाओं की कमी ही नहीं बल्कि वेंटीलेटर के फ्रंट पर भी जूझ रहा है। केंद्र सरकार मिले 809 वेंटीलेटरों में से 108 को लगाने के लिए बीईएल इंजीनियर नहीं है। बैठक के दौरान राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता को एक तरफ रखकर कैप्टन पर हमलावर रुख अपनाने वाले राज्यसभा सदस्य प्रताप सिंह बाजवा और शमशेर सिंह दूलो ने पंजाब में कोरोना से निपटने के कदमों की सराहना कर यह भी पूछा कि वह किस प्रकार मदद कर सकते हैं।

राज्यसभा सदस्य प्रताप सिंह बाजवा ने कहा कि कैप्टन ऑक्सीजन की कमी का मुद्दा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष उठाएं। बोकारो से आक्सीजन मिलने में तीन दिन का समय लग रहा है जबकि पाकिस्तान से यह केवल एक घंटे में मिल जाएगी। इसलिए अगर चीन से दवाएं मंगवाई जा सकती हैं तो पाकिस्तान से ऑक्सीजन मंगवाने की अनुमति दी जाए। बाजवा के सुझाव का सांसद रवनीत सिंह बिट्टू और शमशेर सिंह दूलो ने भी समर्थन किया।

कैप्टन ने सांसदों से कहा कि वह टैंकरों की कमी को लेकर गृह मंत्री अमित शाह से मिलकर इनकी संख्या बढ़ाने की मांग करें। वहीं दूलो ने कहा कि केंद्र पंजाब के साथ पक्षपाती रवैया अपना रहा है। सांसद मनीष तिवारी ने वैक्सीन की कमी को लेकर सांसदों के साथ मिलकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डा. हर्षवर्धन के मुलाकात करने की बात कही। इसी दौरान खडूर साहिब के सांसद जसबीर सिंह डिंपा ने कहा कि निजी अस्पतालों की मनमानी रोकने के लिए उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए।

एम्स में गंभीर मरीजों के लिए कोरोना केयर का इंतजाम नहीं- कैप्टन ने कहा कि अनुरोध के बावजूद मोहाली में केंद्रीय संस्था आईसर ने कोरोना टेस्टिंग में समर्थन नहीं दिया। प्रधानमंत्री ने पांच साल पहले बठिंडा एम्स का नींव पत्थर तो रखा लेकिन वहां भी अब तक गंभीर मरीजों के लिए कोरोना केयर उपलब्ध नहीं है। यहां पंजाब से रैफर किए गए ज्यादातर मरीजों को दाखिल करने से इन्कार किया जा रहा है। यहां पंजाब के मेडिकल कालेजों की अपेक्षा कम टेस्ट हो रहे हैं।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री मुथुवेल करुणानिधि स्टालिन चेन्नई के राजभवन में राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने उनके शपथ ग्रहण समारोह के दौरान शुभकामनाएं दीं।

हैदराबाद में अस्पताल में बेड उपलब्ध न होने के कारण एक कोविड -19 मरीज को अस्पताल में भर्ती होने के लिए ऑटोरिक्शा में इंतजार करते हुए।

असम के मंत्री हिमंत बिस्वा सरमा गुवाहाटी में एक कोविड -19 श्मशान घाट पर।

एक नजर

कर्नाटक में 12 मई से आगे बढ़ सकता है लॉकडाउन, सीएम येदियुरप्पा ने दिए संकेत

बेंगलुरु । कर्नाटक के मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने शुक्रवार को संकेत दिया कि राज्य भर में लगाए गए लॉकडाउन जैसे प्रतिबंध को 12 मई से आगे बढ़ाए जाने की संभावना है। येदियुरप्पा ने शुक्रवार सुबह बेंगलुरु के गांधी नगर में एक मंदिर में संवाददाताओं से कहा, हम अधिकारियों के साथ इस पर चर्चा कर रहे हैं। कठोर कार्रवाई करना अपरिहार्य हो गया है। उन्होंने कहा कि आज और कल की बैठकों में इस पर फैसला हो जाएगा कि किस तरह की कार्रवाई की जानी चाहिए। आपको बता दें कि देश के कई राज्यों में कोरोना लॉकडाउन की वजह से कर्नाटक में भी इसके विस्तार की संभावना बढ़ गई है।

कर्नाटक में कोरोना वायरस संक्रमण के 49,058 नए मामले, 328 मरीजों की मौत - कर्नाटक में गुरुवार को कोरोना वायरस संक्रमण के 49,058 नए मामले सामने आए और इसके साथ ही अब तक संक्रमित हुए लोगों की संख्या बढ़कर 17,90,104 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि पिछले 24 घंटे में कोविड-19 के 328 मरीजों की मौत के बाद प्रदेश में इस संक्रमण के चलते जान गंवाने वालों की संख्या बढ़कर 17,212 हो गई।

बेंगलुरु शहरी क्षेत्र में ही संक्रमण के 23,706 नए मामले सामने आए जबकि 139 मरीजों ने दम तोड़ दिया। विभाग के मुताबिक, कर्नाटक में 5,17,075 मरीज उपचाराधीन हैं। राज्य में आज 18,943 लोग ठीक हुए और अब तक 12,55,797 मरीज ठीक हो चुके हैं। राज्य में गुरुवार 1,64,441 नमूनों की जांच की गई। अब तक 2.65 करोड़ नमूनों की जांच हो चुकी है।

माउंट एवरेस्ट पर पहुंचा कोरोना वायरस, कई पर्वतारोही निकले पॉजिटिव

नई दिल्ली । कोरोना वायरस बीमारी (कोविड-19) ने दुनिया की सबसे ऊंची चोटियों को भी नहीं बख्शा। नॉर्वेजियन पर्वतारोही के साथ-साथ अप्रैल के अंत में माउंट एवरेस्ट पर इसका संक्रमण हो गया, वायरस ने पर्वतारोहियों को दुनिया की सातवीं सबसे ऊंची चोटी - धौलागिरी - 345 किलोमीटर (214 मील) एवरेस्ट के पश्चिम में चोट पहुंचाया है। टूर ऑपरेटर सेवन समिट्स ट्रेक मिंगमा शेरपा की चेयरपर्सन के हवाले से सीएनएन की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कम से कम 19 लोगों को पहाड़ के शिविरों से निकाला गया है, जिसमें से सात कोरोना पॉजिटिव पाए गए। 12 की जांच होनी बाकी है। पोलिश पर्वतारोही पावेल माइकेल्स्की के फेसबुक पोस्ट के अनुसार, कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद एवरेस्ट पर भी 30 लोगों को बेस कैंप से रेसक्यू किया गया। वर्ल्डोमीटर के अनुसार, कोरोना वायरस ने दुनिया के 15.6 करोड़ से अधिक लोगों को संक्रमित किया है। इस महामारी ने 30 लाख से अधिक लोगों की जिंदगी छीन ली। इस महामारी ने चीन को पिछले साल मार्च में दुनिया की सबसे ऊंची चोटी के परमिट रद्द करने के लिए मजबूर किया। इसके तुरंत बाद, नेपाल ने भी पहाड़ की ओर से चोटी पर आने वाले सभी अभियानों को बंद कर दिया। समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, अब एक साल बाद प्रतिबंधों में ढील दी गई है। 8848.86 मीटर ऊंचे पहाड़ ने अप्रैल तक के लिए रिकॉर्ड 394 परमिट जारी किए हैं। नेपाल अपने राजस्व का एक बड़ा हिस्सा पर्यटन क्षेत्र से उत्पन्न करता है। कई नेपाली अपनी आजीविका के लिए चढ़ाई पर निर्भर हैं। पिछले साल के मौसम के बाद महामारी के कारण लॉकडाउन लगाया गया था। इस साल के परमिट कई स्थानीय गाइड, शेरपा और शेफ के लिए आशा की किरण हैं। पर्यटक सामाजिक दूरी के लिए प्रयास करेंगे। हालांकि, विशेषज्ञों के अनुसार, कोविड-उपयुक्त व्यवहार का पालन करना कठिन हो सकता है। बेस कैंप वास्तव में एक छोटा शहर है।

राजस्थान में 24 मई तक रहेगा सख्त लॉकडाउन, जानें, महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश

जोधपुर/जयपुर । राजस्थान में 10 से 24 मई तक सख्त लॉकडाउन लागू होगा। प्रदेश में विवाह समारोह 31 मई के बाद ही आयोजित किए जाएंगे। महाराष्ट्र बिहार और उड़ीसा के बाद राजस्थान में भी आगामी 15 दिनों के लिए सख्त लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई है राजस्थान में दिनांक 10 मई से 24 मई तक लॉकडाउन की कड़ाई से पालना के आदेश जारी कर दिए गए हैं। आवश्यक सेवाओं को छोड़कर सबकुछ बंद रहेगा। सरकार ने इस लॉकडाउन की समय सीमा में विवाह समारोह में महज 11 लोगो की स्वीकृति जारी की है। हालांकि सरकार ने इसके लिए भी कोर्ट मैरिज को प्राथमिकता दी है।

आइये जानें, महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश- राजस्थान सरकार ने भी राज्य में सख्त लॉकडाउन की घोषणा की है। सरकार की नई गाइडलाइन के तहत 10 मई के प्रातः 5:00 से 24 मई की सुबह 5:00 बजे तक लॉकडाउन रहेगा और राज्य में विवाह समारोह 31 मई 2021 के बाद ही आयोजित किए जा सकते हैं। किराना फल सब्जी दूध डेयरी से जुड़ी दुकाने सवेरे 6:00 बजे से 11:00 बजे तक की खुली रह सकेंगे। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने हालांकि पहले ही आमजन से कोरोना संक्रमण के विकट परिस्थिति में विवाह समारोह को टालने की मार्मिक अपील की है। अब नई गाइडलाइन में 31 से संख्या घटाकर महज 11 लोगों की मौजूदगी में विवाह करने की इजाजत दी है और कोर्ट मैरिज को सरकार ने महत्व देते हुए बिना समारोह विवाह संपन्न करने की इजाजत दी है। 11 लोगों के नाम भी कार्यक्रम से पूर्व में देने होंगे। विवाह समारोह से जुड़े किसी भी प्रकार के सामान की होम डिलीवरी नहीं की जा सकेगी और विवाह आयोजन से जुड़े मैरिज गार्डन मैरिज हॉल होटल परिसर शादी समारोह के लिए बंद रहेंगे। ऐसे में मैरिज गार्डन और होटल की एडवांस बुकिंग राशि संचालकों को उन्हें लौटानी होगी।

वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए हुई मंत्रिमंडल की बैठक के बाद बृहस्पतिवार रात जारी नई गाइडलाइन के अनुसार किराने की दुकानें सुबह 6 से 11 बजे तक ही खुल सकेंगी। दूध की डेयरी सुबह 6 से 11 और शाम 5 से 7 खुल सकेगी। खाद्य पदार्थ, किराना, आटा चक्की, फल सब्जियों की दुकानें खुली रहेगी।

ईमित्र और आधार केंद्र खुलेंगे। निर्माण सामग्री से संबंधित दुकानें नहीं खुल सकेंगी माल के आवागमन के लिए दी गई छूट के अनुसार दूरभाष अथवा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ज़ोरदार मिलने पर सामग्री की आपूर्ति की जा सकेगी

आम लोग पूजा-अर्चना और इबादत घर में रहकर ही कर सकेंगे। सभी तरह के धार्मिक स्थल बंद रहेंगे। मेडिकल सेवाओं के अतिरिक्त सभी प्रकार के सरकारी व गैर सरकारी निजि परिवहन के साधन बंद रहेंगे। वैक्सीनेशन के लिए सरकारी या निजी ऑप्शन खुला रहेगा। निर्माण सामग्री से संबंधित दुकाने फोन पर या ऑनलाइन इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से आर्डर मिलने पर सामग्री उपलब्ध करा सकेंगे। फैक्ट्रियों में मजदूरों के पलायन को रोकने के लिए संस्थानों द्वारा श्रमिकों को पास जारी किए जाएंगे और अधिकृत व्यक्ति के हस्ताक्षर वाले कार्ड के जरिए बस वाहन चालक और कंडक्टर के माध्यम से मजदूर के परिवहन की व्यवस्था रहेगी। इसकी सूचना जिला कलेक्टर कार्यालय को दी जानी अनिवार्य है।

मिठाई बेकरी रेस्टोरेंट और खाना के संबंध में होम डिलीवरी की सुविधा ऑनलाइन माध्यम से खुली रहेगी।

कोरोना संक्रमित रेप के आरोपी आसाराम की तबीयत और बिगड़ी, वेंटिलेटर पर रखा गया

नई दिल्ली । बलात्कार के आरोप में सजा काट रहे कथित धर्मगुरु आसाराम बापू की तबियत कोरोना संक्रमित होने के बाद बिगड़ गई है। जोधपुर में एमडीएम अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराने के बाद उन्हें अब वेंटिलेटर पर भेज दिया गया है। बता दें कि आसाराम बापू, 16 साल की लड़की के यौन उत्पीड़न के आरोप में जेल गए थे, कोरोना पॉजिटिव होने के बाद अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष में भेज दिया गया था।

सांस लेने में कठिनाई की शिकायत के बाद बुधवार रात आसाराम को अस्पताल ले जाया गया। सूत्र ने बताया, उन्हें वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा गया है और उनकी हालत स्थिर बताई गई है। कोविड -19 परीक्षण के लिए अन्य कैदियों के साथ उनके नमूने लिए गए, जिसमें उनका परिणाम सकारात्मक आया।

जेल के एक अधिकारी ने कथित तौर पर खुलासा किया है कि 80 वर्षीय आसाराम ने बेचैनी की शिकायत की थी और जब वे उन्हें अस्पताल ले गए तो उनका ऑक्सीजन स्तर बेहद कम था। अधिकारी ने कहा, बुधवार की रात, बुखार और सांस की शिकायत के कारण उनकी हालत बिगड़ गई। हमने उन्हें रात में ही अस्पताल पहुंचाया।

खबर सुनकर आसाराम के अनुयायी अस्पताल पहुंचे। पुलिस को लोगों को संभालने के लिए मशक्कत करनी पड़ी। कुछ लोगों ने अस्पताल परिसर में प्रवेश करने की भी कोशिश की। अस्पताल में घुसने की कोशिश के दौरान दो महिला अनुयायियों को हिरासत में लिया गया। आसाराम बापू को जोधपुर एम्स में भेजने की तैयारी की जा रही है, आसाराम बापू के साथ 12 अन्य कैदी कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं।

इससे पहले आसाराम बापू ने अपनी सेहत का हवाला देते हुए बेल की मांग की थी, वर्तमान में, वह जोधपुर जेल में अपनी सजा काट रहा है। उन्होंने अपनी सजा के खिलाफ राजस्थान उच्च न्यायालय में अपील भी दायर की थी।

2013 में, 16 साल की लड़की ने आसाराम पर जोधपुर के पास मणाई आश्रम में उसके साथ बलात्कार करने का आरोप लगाया। 2014 में आसाराम बापू को गिरफ्तार किया गया था।

राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री मोदी को लिखी चिट्ठी, कोरोना के स्वरूपों का वैज्ञानिक तरीके से पता लगाने का किया आग्रह

नई दिल्ली । भारत कोरोना की दूसरी और घातक लहर के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है। इस बीच कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से आग्रह किया कि कोरोना वायरस के सभी स्वरूपों का वैज्ञानिक तरीकों से पता लगाने के साथ ही पूरी दुनिया को इस बारे में अवगत कराया जाए तथा सभी भारतीय नागरिकों को जल्द टीका लगाया जाए।

उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को पत्र लिखकर यह आरोप भी लगाया कि सरकार की विफलता के कारण देश एक बार फिर से राष्ट्रीय स्तर के लॉकडाउन के मुहाने पर खड़ा हो गया है और ऐसे में गरीबों को तत्काल आर्थिक मदद दी जाए ताकि उन्हें पिछले साल की तरह पीड़ा से नहीं गुजरना पड़े।

पत्र में राहुल गांधी ने कहा, मैं आपको एक बार फिर पत्र लिखने के लिए विवश हुआ हूं क्योंकि हमारा देश कोविड सुनामी की गिरफ्त में बना हुआ है। इस तरह के अप्रत्याशित संकट में भारत के लोग आपकी सबसे बड़ी प्राथमिकता होने चाहिए।

मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप देश के लोगों को इस पीड़ा से बचाने के लिए जो भी संभव हो, वह करिए।

उन्होंने कहा, दुनिया के हर छह लोगों में से एक व्यक्ति भारतीय है। इस महामारी से अब यही पता चला है कि हमारा आकार, आनुवांशिक विविधता और जटिलता से भारत में इस वायरस के लिए बहुत ही अनुकूल माहौल मिलता है कि वह अपने स्वरूप बदले तथा अधिक खतरनाक स्वरूप में सामने आए। मुझे डर इस बात का है कि जिस डबल म्यूटेंट और ट्रिपल म्यूटेंट को हम देख रहे हैं, वह शुरुआत भर हो सकती है।

उनके मुताबिक, इस वायरस का अनियंत्रित ढंग से प्रसारित होना न सिर्फ हमारे देश के लोगों के लिए घातक होगा, बल्कि शेष दुनिया के लिए भी होगा। उन्होंने प्रधानमंत्री को सुझाव दिया, इस वायरस एवं इसके विभिन्न स्वरूपों के बारे में वैज्ञानिक तरीके से पता लगाया जाए। सभी नए म्यूटेशन के खिलाफ टीकों के असर का आकलन किया जाए। सभी लोगों को तेजी से टीका लगाया जाए। पारदर्शी रहा जाए और शेष दुनिया को हमारे निष्कर्षों के बारे में अवगत कराया जाए।

राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार के पास कोविड के खिलाफ टीकाकरण को लेकर कोई स्पष्ट रणनीति नहीं हैं और सरकार ने उसी समय इस महामारी पर विजय की घोषणा कर दी जब यह वायरस फैल रहा था। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की विफलता के कारण आज राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन अपरिहार्य लगता है। कांग्रेस नेता ने प्रधानमंत्री से आग्रह किया कि इस स्थिति को देखते हुए कमजोर तबकों के लोगों को वित्तीय मदद और खाद्य सामाग्री उपलब्ध कराई जाए ताकि लॉकडाउन के कारण गरीबों को उस पीड़ा को न झेलना पड़े जो उन्हें पिछले साल के लॉकडाउन के समय झेलनी पड़ी थी। उन्होंने कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई में पूरे सहयोग का भरोसा दिलाते हुए कहा कि इस संकटकाल में विभिन्न पक्षों को विश्वास में लिया जाए ताकि सब मिलकर भारत को सुरक्षित रखने के लिए काम कर सकें।

असम के चाय बगानों में फैला कोरोना वायरस, 300 से ज्यादा लोग संक्रमित

नई दिल्ली । पूरे देश में कोहराम मचा रहा कोरोनमा वायरस अब असम के चाय बगानों में भी पहुंच गया है, डिब्रूगढ़ और बिश्वनाथ जिलों में 300 से अधिक लोग कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। डिब्रूगढ़न की स्वास्थ्य सेवाओं में काम करने वाले डॉ नबज्योति गोगोई ने कहा, हमें ज़ालोनी चाय एस्टेट में कई कोरोना मामले मिले हैं। परीक्षण के पहले दिन, 39 सकारात्मक मामलों का पता चला था। दूसरे दिन 90 रिपोर्टें सकारात्मक आईं और तीसरे दिन लगभग 50 से अधिक मामले सामने आए।

उन्होंने कहा कि एक विशेष परीक्षण ड्राइव के बाद लगभग 60 मामले दो अन्य चाय बागानों में पाए गए। चाय बागानों को कंटेनमेंट जोन घोषित कर दिया गया है और ज्यादा मामले एसिम्टोमेटिक मिले हैं, उनकी स्थिति के आधार पर, उन्हें अलग या घर में क्वारंटाइन रखा गया है।

डॉ गोगोई ने कहा, पिछले साल हमारे जिले के कई चाय बागानों में सीरो सर्वेक्षण में पाया गया कि ज्यादातर लोग पहली लहर के दौरान संक्रमित नहीं थे। इस साल, जब राज्य में मामले बढ़ रहे थे, हमने इन जगहों पर फिर से परीक्षण किए और सकारात्मक मामले पाए। अगर टेस्ट ड्राइव का आयोजन नहीं किया गया होता, तो ज्यादातर रोगी, जो कि एसिमटोमेटिक हैं, उनका ध्यान इस ओर नहीं जाता और वायर, का फैलना जारी रहता।

बिश्वनाथ जिले में भी चाय बागानों के श्रमिकों के बीच कई मामलों का पता चला है और प्रशासन ने यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए हैं कि वायरस अन्य क्षेत्रों में न फैले।

गुरुवार को, असम में कोरोना के 4,936 नए मामले सामने आए,ये राज्य में एक दिन में आने वाला अब तक सबसे बड़ा आंकड़ा है। इसमें गुरुवार को 46 मौतें भी दर्ज की गईं।

भिखारियों और कैदियों को भी लगेगा कोरोना टीका, आईडी की भी नहीं होगी जरूरत

नई दिल्ली । केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने जिला कार्यबल के लिए एक एसओपी जारी किया है। इसमें ऐसे लोगों को ष्टश्ङ्खढ्ढठ्ठ पर रजिस्ट्रेशन करने की जिम्मेदारी दी गई है जिनके पास फोटो पहचना पत्र नहीं है। चूंकि कोरोना के खिलाफ सभी टीकाकरण को सॉफ्टवेयर पर दर्ज किया जाएगा। इसके लिए एक वैध पहचान पत्र की आवश्यक्ता होती है।

केंद्र ने कहा कि वैध पहचान पत्र वाले एक प्रमुख सूत्रधार की पहचान की जाएगी जो इन समूहों के

टीकाकरण के लिए सेंटर प्वाइंट होगा। केंद्र ने यह भी कहा है कि जेल अधिकारिय और वृद्धाश्रम के अधिकारी प्रमुख सूत्रधार के रूप में काम कर सकते हैं

इस प्रक्रिया में किसे टीका लगाया जाएगा- केंद्र ने फोटो पहचान पत्र के बिना टीकाकरण के लिए लोगों के कई समूहों की पहचान की है। लोगों के ऐसे समूहों में खानाबदोश (विभिन्न धर्मों के साधु/संत सहित), जेल के कैदी, मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों में बंद कैदी, वृद्धाश्रम के लोग, भिखारी, पुनर्वास केंद्रों में रहने वाले शामिल हैं। उन लोगों को भी टीका दिया जाएगा, जिनके पास निर्धारित फोटो पहचान पत्र नहीं है।

टीकाकरण के लिए आवश्यक दस्तावेज- टीकाकरण के लिए आधार कार्ड, वोटर आईडी कार्ड, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, एनपीआर स्मार्ट कार्ड और पेंशन दस्तावेज फोटो पहचान पत्र के तौर पर मान्य हैं। मंत्रालय ने राज्य सरकारों से ऐसे लोगों के बारे में कई आवेदन प्राप्त किए हैं जिनके पास इनमें से कोई भी नहीं है। मंत्रालय ने कहा, कोविड-19 टीकाकरण सेवाओं को पहचान प्रमाणों के अभाव में अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। इन लोगों का टीकाकरण केवल सरकारी केंद्रों पर होगा। लाभार्थियों की पहचान को सत्यापित करने के लिए प्रमुख सूत्रधार की आवश्यकता होगी। कोविड -19 महामारी की दूसरी लहर के आगमन के साथ, जेल अधिकारियों ने कैदियों के बीच संक्रमण के तेजी से प्रसार का मुद्दा उठाया है। तिहाड़ जेल के लगभग 319 कैदियों को कोविड-19 से संक्रमित किया गया है। अभी तक पांच कैदी की संक्रमण से मौत हो गई। महानिदेशक (जेल), संदीप गोयल ने यह जानकारी दी है। केरल सरकार ने जेलों में सामाजिक दूरी सुनिश्चित करने के लिए कैदियों को दो सप्ताह की पैरोल देने का फैसला किया है। समाचार एजेंसी एएनआई ने बताया कि उत्तर प्रदेश के मेरठ में भी लगभग 280 कैदियों को जमानत या पैरोल पर रिहा किया जाएगा।

बंगाल ने खींच दी कांग्रेस के माथे पर चिंता की लकीरें, आगामी चुनावों में कठिन होगी राह?

नई दिल्ली । विधानसभा चुनाव में कांग्रेस कोई करिश्मा नहीं दिखा पाई। तमिलनाडु को छोड़कर बाकी सभी प्रदेशों में पार्टी अपना पुराना प्रदर्शन दोहराने में भी नाकाम रही। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस मुख्य विपक्षी दल थी, पर रुतबा तो दूर पार्टी खाता तक नहीं खोल पाई। ऐसे में इस हार का खामियाजा कांग्रेस को अगले साल होने वाले छह राज्यों के विधानसभा चुनाव में भी उठाना पड़ सकता है।

वर्ष 2022 में छह राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं। इनमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब व मणिपुर के साथ हिमाचल प्रदेश और गुजरात शामिल हैं। पंजाब को छोड़कर बाकी सभी प्रदेशों में भाजपा की सरकार है। उप्र में कांग्रेस लंबे वक्त सत्ता से बाहर है। पार्टी के पास मजबूत संगठन नहीं है। ऐसे में पार्टी को 2017 की तरह एक बार फिर गठबंधन की जरूरत है।

यूपी में अपनी मौजूदगी बनाए रखना आसान नहीं - उप्र कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि वर्ष 2017 में सपा के साथ गठबंधन के बावजूद प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं था। 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को सिर्फ एक सीट मिली थी। इन चुनाव में पार्टी बेहतर प्रदर्शन करती तो कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ता। जीत की उम्मीद जगती, पर मौजूदा हालात में पार्टी के लिए अपनी मौजूदगी बनाए रखना आसान नहीं है।

गुजरात में पार्टी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं - गुजरात में पार्टी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। ज्यादातर स्थानीय नेता और विधायक कांग्रेस का हाथ छोड़कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं। वर्ष 2017 में युवाओं की जिस तिगड़ी के जरिए कांग्रेस, भाजपा को 100 सीट सीट कम पर रोकने में सफल रही थी, वह हार्दिक पटेल, अल्पेश ठाकोर और जिग्नेश मेवानी की तिगड़ी बिखर चुकी है। पटेल कांग्रेस में हैं, पर बहुत खुश नहीं हैं।

उत्तराखंड में भी रणनीति साफ नहीं

उत्तराखंड में भी कांग्रेस ने अभी अपनी रणनीति साफ नहीं की है। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस महासचिव हरीश रावत लगातार यह मांग कर रहे हैं कि पार्टी को अपना चेहरा घोषित कर चुनाव तैयारियां शुरू करनी चाहिए। पार्टी के एक नेता के मुताबिक, कांग्रेस पूरी तैयारी और रणनीति बनाकर चुनाव लड़े तो उत्तराखंड में भाजपा को शिकस्त देना बहुत मुश्किल नहीं है।

पंजाब में बिगड़ सकती है स्थिति

इन चुनाव में कांग्रेस के खराब प्रदर्शन से पंजाब में भी स्थिति बिगड़ सकती है। पार्टी की हार से जहां मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की मोलतोल की ताकत बढ़ी है। वहीं, नवजोत सिंह सिद्धू भी बहुत ज्यादा इंतजार करना नहीं चाहते।

पार्टी ने जल्द कोई फैसला नहीं लिया तो पंजाब में भी सत्ता बरकरार रखना आसान नहीं होगा। पार्टी के एक नेता ने कहा कि कांग्रेस को हार के बाद मायूस बैठने के बजाए आत्मचिंतन कर गलतियों को सुधारना चाहिए।

वरिष्ठ पत्रकार शेष नारायण सिंह का निधन, कोरोना वायरस से थे संक्रमित

नोएडा । देश में कोरोना संक्रमण का कहर लगातार बढ़ता जा रहा है। हर दिन जहां लाखों लोग इसकी चपेट में आकर संक्रमित हो रहे हैं, वहीं हजारों लोग अपनी जान गंवा रहे हैं। वरिष्ठ पत्रकार शेष नारायण सिंह का भी शुक्रवार को निधन हो गया, वह कोरोना संक्रमित थे। अक्सर समाचार चैनलों की डिबेट में दिखने वाले शेष नारायण सिंह का ग्रेटर नोएडा के ढ्ढरूस् अस्पताल में इलाज चल रहा था। बीते दिन ही उन्हें प्लाज्मा थैरेपी दी गई थी, लेकिन उनकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। शुक्रवार सुबह शेष नारायण सिंह का निधन हो गया। वह मूलरूप से उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर के रहने वाले थे।

शेष नारायण सिंह के निधन के बाद पत्रकारिता जगत में शोक की लहर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव सहित कई बड़े नेताओं, अधिकारियों और वरिष्ठ पत्रकारों और ने उन्हें श्रद्धांजलि दी है।

प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट किया, वरिष्ठ पत्रकार शेष नारायण सिंह जी का निधन अत्यंत दुखद है। पत्रकारिता जगत में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए वे हमेशा जाने जाएंगे। दुख की इस घड़ी में उनके परिजनों के लिए मेरी संवेदनाएं। ओम शांति!

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ट्वीट कर लिखा, वरिष्ठ पत्रकार श्री शेष नारायण सिंह जी का निधन अत्यंत दुःखद है। आपका सम्पूर्ण जीवन जनपक्षीय पत्रकारिता को समर्पित रहा। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने परम धाम में स्थान व शोकाकुल परिजनों को यह दारुण दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें। ? शांति!

30 अप्रैल को हुआ था रोहित सरदाना का निधन- इससे पहले 30 अप्रैल को आजतक के एंकर और वरिष्ठ पत्रकार रोहित सरदाना का निधन हो गया था। वह भी कोरोना वायरस के संक्रमण की चपेट में थे। उनके निधन के बाद मीडिया जगत से जुड़े तमाम बड़े पत्रकारों ने सोशल मीडिया पर दुख जाहिर किया था। आजतक से पहले हिंदी न्यूज चैनल 'जी न्यूज' में रोहित सरदाना एंकर के पद पर लंबे समय तक कार्यरत थे।

अजय शर्मा का कोविड-19 से निधन

तापसी पन्नू की फिल्म 'रश्मि रॉकेट' के थे एडिटर!

कोरोना वायरस (Coronavirus) लगातार लोगों की जान लेता जा रहा है. फिल्म एडिटर अजय शर्मा (Ajay Sharma) पिछले कई दिनों से कोरोना संक्रमित थे, उन्होंने भी 4 मई को दम तोड़ दिया. अजय बेहद प्रतिभाशाली और उम्दा इंसान थे, उनके निधन की खबर से बॉलीवुड सदमे में है. कई बॉलीवुड सेलेब्स ने सोशल मीडिया पर ट्वीट कर अजय शर्मा को श्रद्धांजलि देते हुए उनके निधन को फिल्म जगत की बड़ी क्षति बताई है.

बॉलीवुड एक्ट्रेस तापसी पन्नू की अपकमिंग फिल्म 'रश्मरॉकेट' पर अजय शर्मा इन दिनों काम कर रहे थे. कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद वे हॉस्पिटल में एडमिट थे. ऑक्सीजन लेवल 83 तक पहुंच गया था. अजय की कोरोना से मौत की पुष्टि उनके एक करीबी दोस्त ने की है. 'जग्गा जासूस', 'कारवां', 'लूडो', 'इंदू की जवानी', 'हाईजैक', 'प्यार का पंचनामा 2', ' तुम मिले' और वेब सीरीज 'बंदिश' जैसे प्रोजेक्ट्स में एडिटिंग करने वाले अजय के निधन ने एक बार फिर बॉलीवुड को झकझोर दिया है. एक्ट्रेस श्रयि पिलगांवकर ने ट्वीट किया- टूट गई हूं. हमने आज अजय शर्मा को खो दिया. वे सिर्फ एक बेहतरीन एडिटर ही नहीं बल्कहीरा इंसान थे. सही नहीं हुआ. निखिल तनेजा ने लिखा- जब से खबर मिली है सदमे में हूं. वहीं तेजेंद्र सिंह को विश्वास ही नहीं हो रहा कि अजय नहीं रहें.

फिल्म एडिटर टी सुरेश ने लिखा, जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं है. तुम्हारी आत्मा को शांति मिले, अजय शर्मा. एक ग्रेट टैलेंट बहुत जल्दी चला गया. उनके परिवार और दोस्तों को इस मुश्किल समय में मेरी संवेदनाएं.

अजय ने 'बर्फी', 'ये जवानी है दिवानी', 'अग्निपथ', 'काई पो चे', 'लाइफ इन ए मेट्रो', 'गोरी तेरे प्यार में', 'आई हेट लव स्टोरीज' और 'द डर्टी पिक्चर में बतौर असिस्टेंट एडिटर काम किया था.अजय शर्मा इन दिनों रश्मि रॉकेट को फाइनल टच देने में जुटे थे. एडिटिंग के अलावा अजय ने निर्देशन में भी अपना हाथ अजमाया था और उन्होंने शॉर्ट फिल्म 'जॉली 1995' का निर्देशन किया था.

रश्मि देसाई का ग्लैमरस अंदाज देख उड़े फैंस के होश, ताबड़तोड़ वायरल हुई Photos

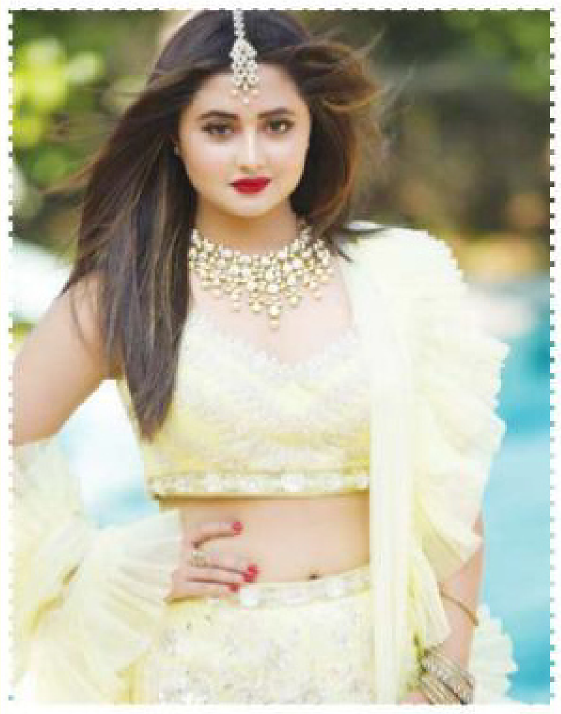

एक्ट्रेस रश्मि देसाई (Rashami Desai) इन दिनों इंस्टाग्राम पर एक बाद एक अपनी बोल्ड तस्वीरें शेयर करती नजर आ रही हैं. पिछले कुछ महीनों से रश्मि का गेटअप ही पूरा बदल चुका है. वह फैशन के मामले में काफी आगे निकलती हुई नजर आ रही हैं. आए दिन उनकी ग्लैमरस तस्वीरें सोशल मीडिया पर धमाल मचाती नजर आ रही हैं. ऐसा लग रहा है मानों रश्मि ने फैशन के मामले में नई जंग छेड़ दी हैं. एक बार फिर उन्होंने अपनी कुछ तस्वीरें शेयर की हैं.

इस तस्वीर में रश्मि देसाई (Rashami Desai) पहले तो येलो कलर के जयपुरी स्टाइल आउटफिट में नजर आती हैं. जिसमें उन्होंने क्रॉप टॉप के साथ ही प्लाजो पहना होता है साथ ही उन्होंने ऊपर से शर्ग कैरी किया होता है.एक्ट्रेस के कर्ल हेयरर्स और ये देसी अंदाज उनके लुक को एक दमप रफेक्ट बना रहा है.

वहीं इस वीडियो के दूसरे क्लिर में वे वॉयलेट कलर के ट्यूनिक ऑउटफिट में नजर आती हैं उन्होंने गले में चोकर और बेलेजर कैरी किया होता है. एक्ट्रेस का ये कूल अंदाज सोशल मीडिया पर छा गया है. फैंस इस वीडियो पर जमकर लाइक्स और कमेंट कर रहे हैं.बता दें कि ये पहली बार नहीं जब रश्मि देसाई (Rashami Desai) की फोटोज सोशल मीडिया पर इतना पसंद किया जा रहा है.

रश्मि देसाई के इस कातिलाना अंदाज पर फैंस जमकर लाइक्स और कमेंट्स कर रहे हैं.रश्मि आए दिन अपने इंस्टाग्राम पर अपनी नई-नई तस्वीरें शेयर करती नजर आ रही हैं, जिसमें उनका ग्लैमरस अंदाज देखते ही बन रहा है.

कोरोना पॉजिटिव अनिरुद्ध दवे की हालत पहले से बेहतर, जल्द मिल सकता है डिस्चार्ज

इन दिनों कई सेलिब्रिटीज कोरोना महामारी की चपेट में हैं. टीवी सीरियल पटियाला बेब्स (Patiala Babes) फेम एक्टर अनिरुद्ध दवे (Anirudh Dave) भी इन दिनों COVID से अपनी जंग लड़ रहे हैं. एक्टर ने सोशल मीडिया के जरिए अपने फैंस को बताया था कि वह कोरोना से संक्रमित हैं. लेकिन, अनिरुद्ध दवे (Anirudh Dave Covid Positive) के फैन उस वक्त परेशान हो गए, जब उनकी पत्नी शुभी ने बताया कि एक्टर की हालत बिलकुल भी ठीक नहीं है. जिसके चलते उन्हें आईसीयू में शिफ्ट कर दिया गया है. लेकिन, अब एक्टर के फैंस के लिए खुशखबरी है.

अनिरुद्ध दवे की हालत में अब सुधार आ रहा है. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पटियाला बेब्स फेम एक्टर की तबीयत अब पहले से बेहतर है. अगर सब ठीक रहा तो जल्द ही एक्टर को जल्दी ही डिस्चार्ज भी किया जा सकता है. अनिरुद्ध दवे की हालत पहले से काफी ठीक बताई जा रही है. बता दें, हाल

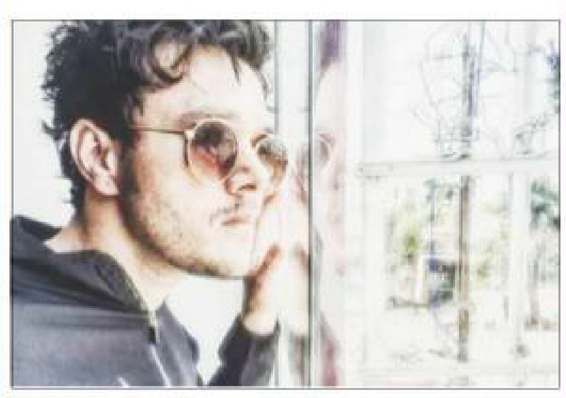

ही में अनिरुद्ध दवे की पत्नी ने एक पोस्ट शेयर किया था, जिसमें उन्होंने एक्टर की हेल्थ अपडेट देते हुए बताया था कि अनिरुद्ध दवे की हालत काफी खराब है, जिसके चलते उन्हें आईसीयू में रखा गया है.

शुभी ने अनिरुद्ध दवे (Anirudh Dave Covid Positive) की एक फोटो शेयर की थी, जिसमें उनके साथ उनका 2 महीने का बेटा नजर आया था. फोटो शेयर करते हुए शुभी ने इस समय को अपनी जिंदगी का सबसे मुश्किल समय बताया था. शुभी ने बताया कि उन्हें अपने 2 महीने के बच्चे को घर पर छोड़कर पति से मिलने अस्पताल जाना पड़ता है. इस मुश्किल समय में दोनों को ही अकेले छोड़ना उनके लिए काफी मुश्किल है.

मालूम हो कि अनिरुद्ध दवे ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फैंस को बताया था कि वह कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं. उन्होंने 23 अप्रैल को एक पोस्ट शेयर किया था, जिसके साथ उन्होंने अपने कोरोना वायरस से संक्रमित होने की जानकारी दी थी. जिसके चलते उनके फैन काफी चिंतित हो गए थे.

सलमान खान ने पेश किया दरियादिली का सबूत, कोरोना से पिता को खोने वाले 18 साल के लड़के की ली जिम्मेदारी

बॉलीवुड के गॉडफादर माने जाने वाले सलमान खान (Salman Khan) एक बार फिर से किसी के लिए मसीहा साबित हुए हैं. सलमान खान (Salman Khan) फिल्मों के अलावा अपनी दरियादिली के चलते सुर्खियों में बने रहते हैं. मार्च के महीने में जब लॉकडाउन लगा था तो सलमान खान की फूड वैन्स ने फ्रंटलाइन वर्कर्स (Frontline Worker) को खाने के पैकेट बांटे थे. इसी बीच सलमान खान ने एक बार फिर अपने दरियादिली का सबूत दिया है.

सलमान खान (Salman Khan) ने कर्नाटक के एक 18 साल साइंस स्टूडेंट की मदद की है, जिसके पिता का हाल ही में कोरोना से निधन हो गया था. इस बारें में जानकारी देते हुए युवा सेना नेता राहुल एस कनाल ने अपने ट्वीट करते हुए दी है. राहुल ने अपने ट्विटर पोस्ट में एक न्यूज पेपर की कटिंग शेयर की है, जिसमें यह जानकारी दी गई है कि सलमान ने 18 वर्षीय साइंस स्टूडेंट की आर्थिक मदद करते हुए उसकी उन सभी जरुरतों को भी पूरा किया है जो उसकी आगे की पढ़ाई करने में मददगार साबित होगी.

बता दें कि राहुल एस कनाल इस समय सलमान खान (Salman Khan) के साथ मिलकर काम कर रहे हैं. रिपोर्ट में कनाल ने ये भी कहा है कि सलमान खान अपने फैंस सहित अन्य लोगों की मदद करने के अपनी पूरी फैमली संग खड़े हैं. उन्होंने अपनी टीम से ये कह रखा है कि जो भी लोग मदद मांगे उन्हें निराश नहीं करना है जो भी संभव हो सके वो मदद करना है.इससे पहले सलमान खान (Salman Khan) का एक वीडियो वायरल हुआ था. वीडियो में भाईजान फ्रंटलाइन वर्कर्स के लिए बने खाने को टेस्ट करते नजर आ रहे थे. सलमान खान (Salman Khan) ने पिछली बार गरीबों को खाना बांटा था. इस बार वह फ्रंटलाइन वर्कर्स को खाना बांट रहे हैं. यूवा सेना लीडर राहुल कनल ने मिड-डे संग बातचीत में बताया कि वह एक्टर संग लगातार कॉर्डिनेट कर रहे हैं. सलमान तभी से काम में लग गए थे, जब सरकार ने 15 दिन के लिए जनता कर्फ्यू का ऐलान किया था.

हनान प्रांत में विश्व टेबल टेनिस मुकाबले में चेंग मिंग रिटर्न शॉट लगाती हुई।

इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में नहीं खेलेंगे बोल्ट : एनजेडसी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट अगले माह दो जून से इंग्लैंड के साथ शुरू हो रही दो टेस्ट मैचों की सीरीज का पहला मैच नहीं खेलेंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनजेडसी) के अनुसार बोल्ट साउथम्पटन में होने वाले इस मैच में नहीं रहेंगे पर वह भारत के साथ होने वाले विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के लिए टीम का हिस्सा जरुर रहेंगे।

भारतीय टीम अभी आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में नंबर पर काबिज है और न्यूजीलैंड की टीम दूसरे नंबर पर है। बोल्ट इससे पहले आईपीएल का 14वां सत्र अनिश्चितकाल के लिए स्थगित होने के बाद स्वदेश लौट गए हैं, जबकि न्यूजीलैंड के टेस्ट खिलाड़ी अभी भारत में ही रुके हुए हैं। न्यूजीलैंड टीम के ये टेस्ट खिलाड़ी 11 मई को इंग्लैंड जाएंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट के अनुसार बोल्ट इंग्लैंड के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज से बाहर हो सकते हैं। वहीं, वह भारत के खिलाफ 18 जून को इंग्लैंड के साउथम्पटन में होन वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए उपलब्ध रहेंगे।

क्रिकेट न्यूजीलैंड के बयान में कहा गया, बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट जून की शुरूआत में टेस्ट टीम के साथ फिर से जुड़ने से पहले अपने परिवार को देखने के लिए घर जाएंगे। उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट के लिए चुना जाएगा और वह आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में शामिल होंगे।

बोल्ट निलंबित हुए आईपीएल में मुंबई इंडियंस की टीम में शामिल थे। न्यूजीलैंड के 17 लोग आईपीएल से जुड़े हैं, जिसमें 10 खिलाड़ी शामिल हैं। एनजेडसी के मुख्य कार्यकारी डेविड वाइट ने कहा, हम इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के भी बेहद आभारी हैं कि वे अभी भारत में मौजूद टेस्ट टीम के चार सदस्यों को अपने यहां जल्दी जगह दे रहे हैं। एनजेडसी ने कहा कि ब्रिटेन में टीम के आगमन के लिए 11 मई से पहले इंतजाम नहीं हो पा रहा था। न्यूजीलैंड में मौजूद टेस्ट टीम के सदस्य 16 और 17 मई को इंग्लैंड के लिए रवाना होंगे। एनजेडसी ने कहा, न्यूजीलैंड के आईपीएल का हिस्सा रहे बाकी खिलाड़ियों, सहयोगी स्टाफ और कमेंटेटरों के साथ बोल्ट शनिवार को आकलैंड पहुंचने वाले दो चार्टर्ड विमानों में से एक में नई दिल्ली से रवाना होंगे जिसके बाद वह पृथकवास में रहेंगे।

उन्होंने कहा, बोल्ट 22 मई को पृथकवास से बाहर निकलेंगे और एक हफ्ता घर में अपने परिवार के साथ बिताएंगे, वह जून की शुरूआत में इंग्लैंड के लिए रवाना होने से पहले माउंट मोनगानुई में अभ्यास भी करेंगे। वाइट ने कहा कि बोल्ट और डोनाल्डसन क्रिकेट बोर्ड और टीम प्रबंधन की सहमति से तीन हफ्ते के लिए स्वदेश लौटेंगे।

पूर्व क्रिकेटर ने कमेंट्री से मिलने वाली फीस कोरोना पीड़ितों के लिए दी

कोलकाता, (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर लक्ष्मीरतन शुक्ला ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की कमेंट्री से मिलने वाली पूरी रकम कोरोना पीड़ितों के लिए पश्चिम बंगाल मुख्यमंत्री राहत कोष में देने की बात कही है। उन्होंने कहा, मुझे खुशी है कि मैं आईपीएल के इस सत्र की कमेंट्री से होने वाली कमाई अपने जन्मदिन के दिन राज्य में कोरोना संक्रमितों की भलाई के लिए दे पा रहा हूं। उन्होंने कहा, मैं आज जो कुछ भी हूं, लोगों की वजह से हूं। अपने जन्मदिन पर अगर मेरे योगदान से लोगों के जीवन में कुछ बदलाव आता है तो मैं खुद को खुशकिस्मत समझूंगा। लक्ष्मीरतन शुक्ला साल 2016 से 2021 के बीच प्रदेश के खेल और युवा कार्यमंत्री भी रहे हैं।

वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 सीरीज से फिर खेलते नजर आ सकते हैं डि विलियर्स

नई दिल्ली, (एजेंसी)। अफ्रीका के क्रिकेट डायरेक्टर ग्रीम स्मिथ ने कहा है कि स्टार बल्लेबाज एबी डि विलियर्स जून में वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली टी20 सीरीज से एक बार फिर मैदान में उतर सकते हैं। इससे पहले डि विलियर्स ने साल 2018 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। हाल ही में इस बल्लेबाज ने आईपीएल 2021 में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) की ओर से शानदार प्रदर्शन किया था। दक्षिण अफ्रीका के मुख्य कोच मार्क बाउचर ने पिछले महीने ही डि विलियर्स के टी20 विश्व कप में खेलने की बात कही थी। वहीं डि विलियर्स ने कहा था कि यदि उन्हें दक्षिण अफ्रीका की ओर से एक बार फिर से खेलने का मौका मिलता है तो यह शानदार होगा। उन्होंने कहा था कि वह आईपीएल के बाद मार्क बाउचर से बात करेंगे। डि विलियर्स ने कहा था कि बाउचर ने उनकी इच्छा जाननी चाही तो उन्होंने कहा वह जरुर खेलना चाहते हैं।

स्मिथ ने इससे पहले कहा था कि दक्षिण अफ्रीका की टीम अगले महीने वेस्टइंडीज के दौरे पर जाएगी। इस दौरान दक्षिण अफ्रीका की टीम मेजबान वेस्टइंडीज के खिलाफ दो टेस्ट और पांच टी20 मैचों की एक सीरीज खेलेगी। स्मिथ ने दौरे की घोषणा के साथ ही संकेत दिए कि इंडीज दौरे पर टी20 सीरीज में डिविलियर्स एक बार फिर टीम की जर्सी में नजर आ सकते हैं। साथ ही स्मिथ ने एबी डिविलियर्स, इमरान ताहिर और क्रिस मौरिस की वापसी की उम्मीदें भी जताई है।

विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप में रोहित के साथ पारी शुरू कर सकते हैं धवन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सलामी बल्लेबाज शिखर धवन को आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के फाइनल में सलामी रोहित शर्मा के जोड़ीदार के तौर पर खेलने का अवसर मिल सकता है। धवन को अनुभवी होने के साथ ही इस बात का भी लाभ मिल सकता है कि रोहित के साथ उनका अच्छा तालमेल रहा है। भारतीय टीम में जहां चेतेश्वर पुजारा, विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह, रविचंद्रन अश्विन जैसे बल्लेबाज हैं। बल्लेबाजी क्रम के अनुसार रोहित फाइनल में खेलेंगे। वहीं तीसरे नंबर पर चेतेश्वर पुजारा, चौथे नंबर पर विराट कोहली, पांचवें नंबर पर अजिंक्य रहाणे और छठे नंबर पर विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत खेलेंगे। टीम में इशांत शर्मा, मोहम्मद शमी और जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाज हैं। स्पिनर के तौर पर रविचंद्रन अश्विन शामिल हैं जबकि ऑलराउंडर के तौर पर रवींद्र जडेजा और हार्दिक पंड्या में से किसी एक को जगह मिल सकती है। हालांकि ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर अच्छा प्रदर्शन करने वाले शुभमन गिल फॉर्म में नहीं है, ऐसे में उन्हें जगह मिलना संभव नहीं है। शुभमन ने इंग्लैंड के खिलाफ चार मैचों की टेस्ट सीरीज में केवल 19.80 की औसत से 119 रन बनाये हैं। उनका खराब प्रदर्शन आईपीएल 2021 में भी जारी रहा है। आईपीएल में कोलकाता नाइट राइडरर्स का यह सलामी बल्लेबाज सात मैचों में 18.85 की औसत से केवल 132 रन बनाने में सफल रहा है। ऐसे में उनकी जगह धवन और पृथ्वी शॉ में से किसी एक को मिल सकती है। धवन ने आईपीएल में आठ मैचों में 54.28 की औसत से 380 रन बनाये हैं। वहीं पृथ्वी ने आठ मैचों में 166.48 की स्ट्राइक रेट से 308 रन बनाए हैं। दोनों खिलाड़ियों ने तीन-तीन अर्धशतक भी लगाए हैं। धवन साल 2018 से भारतीय टेस्ट टीम से बाहर हैं। साल 2018 में इंग्लैंड दौरे पर ही खराब प्रदर्शन के बाद ही उन्हें टीम से बाहर कर दिया था। भारतीय टीम अभी आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में पहले जबकि न्यूजीलैंड की टीम दूसरे नंबर पर है। ऐसे में दोनो ही टीमों के बीच फाइनल मुकाबला रोमांचक होने की संभावनाएं हैं। वहीं दूसरी ओर न्यूजीलैंड की टीम में केन विलियमसन, रॉस टेलर, ट्रेंट बोल्ट और टिम साउदी जैसे मैच विजेता खिलाड़ी हैं।

जापान में ओलंपिक मशाल के साथ दौड़ लगाती हुई पूर्व ओलंपियन इरीगुची मशाशी।

पूर्व क्रिकेटर इरफान पठान पर बुजुर्ग दंपति ने लगाए गंभीर आरोप

अहमदाबाद, (एजेंसी)। भारतीय टीम के पूर्व भारतीय क्रिकेटर इरफान पठान पर एक बुजुर्ग दंपत्ति ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि इरफान के उनकी बहू के साथ अवैध संबंध हैं। साथ ही धमकी दी कि इस मामले में इरफान पर कार्रवाई नहीं हुई तो वे आत्महत्या कर लेंगे। इस दंपत्ति का इस मामले में सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी वायरल हुआ है। वहीं पूर्व क्रिकेटर इरफान ने अभी तक इस मामले में कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। स्थानीय मीडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार पुलिस से मिली जानकारी के आधार पर कहा गया है कि शिकायतकर्ता की बहू ने उनके पूरे परिवार के खिलाफ दहेज प्रताड़ना मामले में शिकायत दर्ज कराई थी। जिसकी अभी पुलिस जांच कर रही है। वहीं शिकायतकर्ता का कहना है कि उनकी बहू का लम्बे समय से इरफान से चक्कर चल रह है और उनको झूठे मामले में फंसाया जा रहा है। शिकायतकर्ता के बेटे ने कहा, इरफान और उनकी पत्नी के बीच शादी से पहले ही अवैध संबंध थे।

आईपीएल इतिहास के पावरप्ले में केकेआर ने बनाये हैं सबसे ज्यादा रन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का 14 सत्र निलंबित हो गया है। इस सत्र में कोलकाता नाइटराईर्स (केकेआर) का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। इसके बाद भी अगर पावरप्ले इतिहास की बात करें तो अब तक सबसे ज्यादा रन केकेआर टीम के ही नाम हैं। चार साल पहले केकेआर ने आईपीएल इतिहास के पावरप्ले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ सबसे ज्यादा रन बनाए थे।

आरसीबी ने तब पहले बल्लेबाजी करते हुए 158 रन बनाए थे। वहीं इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए केकेआर ने बिना किसी नुकसान के 6 ओवरों में ही 105 रन बनाए थे। यह आईपीएल पावरप्ले में अब तक सबसे ज्यादा रन हैं। केकेआर के बल्लेबाज क्रिस लिन और सुनील नरेन के शानदार पहले ओवर में 14, दूसरे में 6, तीसरे में फिर 14, चौथे में 25, पांचवें में 26 (2 अतिरिक्त) और छठे ओवर में 20 रन बनाते हुए कुल 105 रन बनाए थे। इस दौरान लिन ने 20 गेंदों पर 49 और नरेन ने 16 गेंदों पर 54 रन ठोके थे। पावरप्ले में तेज शुरूआत के बाद केकेआर की गति बाद में थोड़ी कम हो गई थी और जीत के अगले 54 रन बनाने के लिए उसे 9 ओवर खेलने पड़े थे हालांकि वह काफी रनों से मैच जीत गयी थी।

पृथ्वी सहित इन खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर टीम में जगह का दावा पेश किया

मुम्बई, (एजेंसी)। युवा बल्लेबाज पृथ्वी शॉ ने पिछले कुछ समय में अपने शानदार प्रदर्शन से एक बार फिर टीम इंडिया में वापसी का दावा किया है। हाल में निलंबित हुए आईपीएल में पृथ्वी का प्रदर्शन अच्छा रहा था। इससे पहले इस बल्लेबाज ने विजय हजारे ट्रॉफी में भी अच्छा प्रदर्शन कर अपनी फॉर्म वापस हासिल की थी। पृथ्वी ने इस सत्र में टीम के लिए खेले 8 मैचों में 166.48 के स्ट्राइक रेट से 308 रन बनाए थे। इस दौरान उन्होंने सात मैचों में तीन अर्धशतक लगाकर सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ियों में चौथा स्थान हासिल किया। पृथ्वी के अलावा रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के हर्षल पटेल आईपीएल 2021 के पहले हाफ में शानदार प्रदर्शन करने वाले भारतीय खिलाड़ियों में शामिल हैं। आरसीबी के इस गेंदबाज ने इस सत्र की शुरूआत मुंबई इंडियंस के खिलाफ पहले मैच में 5 विकेट लेने के साथ की है। इस खिलाड़ी ने 7 मैचों में 17 विकेट लिए। आईपीएल स्थगित होने से पहले तक वह सबसे ज्यादा विकेट लेकर पहले स्थान पर आ गये हैं।

आवेश खानः युवा तेज गेंदबाज आवेश ने अपनी लाइन और लेंथ से सबको प्रभावित किया। आवेश सत्र के पहले हाफ में दिल्ली कैपिटल की ओर से सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाले में शामिल थे। उन्होंने टीम को आठ मैचों में छह में जीत के साथ शीर्ष स्थान दिलाने में अहम भूमिका भी निभाई। आवेश ने दिल्ली की ओर से 8 मैच खेले और 7.70 की इकोनॉमी से गेंदबाजी की है। देवदत्त पडिक्कलः रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के सलामी बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल ने राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ खेले गए मैच में 52 गेंदों में नाबाद 101 रनों की पारी खेली। अपनी इस पारी में 20 साल के खिलाड़ी ने 11 चौके और 6 छक्के लगाये। पडिक्कल ने आईपीएल के पिछले सीजन में भी शानदार परफॉर्म किया था। साथ ही उनका घरेलू सत्र भी काफी शानदार रहा है।

चेतन सकारियाः राजस्थान रॉयल्स के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज चेतन सकारिया ने अपनी ओर से शानदार गेंदबाजी की पर वह अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाये। सौराष्ट्र के इस तेज गेंदबाज ने सात मैचों में 23.14 के स्ट्राइक रेट और 31.71 की औसत से 7 विकेट लिए हैं। रुतुराज गायकवाड़ः चेन्नई सुपर किंग्स के क्लासी बल्लेबाजी रुतुराज गायकवाड़ ने पिछले सत्र की तरह ही इस सत्र में भी अपने खेल से सबको प्रभावित किया है। इस सत्र में उन्होंने 7 मैचों में दो अर्धशतक के साथ 197 रन बनाए हैं। वहीं यूएई में पिछले सत्र में उन्होंने लगातार तीन अर्द्धशतक लगाये थे।

मैड्रिड में स्पेन के रफल नडाल रिटर्न शॉट लगाते हुए।

बायो बबल में संक्रमण के साथ ही शुरू हो गया था खतरा : मौरिस

जोहांसबर्ग, (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के ऑलराउंडर क्रिस मौरिस ने कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के जैव सुरक्षित वातावरण (बायो बबल) में कोरोना संक्रमण के मामले पाये जाने के बाद से ही खतरा शुरू हो गया था। वहीं अब स्वदेश पहुंचकर वह राहत का अनुभव कर रहे हैं। आईपीएल को स्थगित किये जाने के बाद मौरिस और 10 अन्य दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी स्वदेश लौट गये हैं। आईपीएल में कोविड-19 के छह मामले पाये गये थे जिसमें चार खिलाड़ी और दो कोच भी शामिल थे। अभी अपने घर में 10 दिन के अनिवार्य पृथकवास पर रह रहे मौरिस ने कहा कि स्वदेश पहुंचकर अवश्य ही राहत मिली है।

मौरिस ने कहा कि उन्हें कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के दो खिलाड़ियों वरुण चक्रवर्ती और संदीप वारियर के संक्रमित पाये जाने के बारे में रविवार की रात को ही जानकारी मिली थी। उन्होंने कहा, जैसे ही हमें इस बारे में पता चला कि बायो बबल (जैव सुरक्षा घेरे) के अंदर खिलाड़ी पॉजिटिव पाये गये हैं तो सभी ने सवाल करने शुरू कर दिये। हम सभी को तभी खतरे का अहसास होने लगा था। मौरिस ने कहा, सोमवार तक जब उन्होंने वह मैच (कोलकाता और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर) स्थगित किया तब तक हमें पता चल गया था कि टूनार्मेंट जारी रखने के लिये दबाव बना हुआ है।

इसके बाद सनराइजर्स हैदराबाद के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋद्धिमान साहा और दिल्ली कैपिटल्स के अमित मिश्रा के पॉजिटिव आने के बाद ही लीग को निलंबित कर दिया गया था। चेन्नई सुपरकिंग्स के गेंदबाजी कोच एल बालाजी और बल्लेबाजी कोच माइकल हसी भी वायरस से संक्रमित पाये गये थे। मौरिस ने कहा, मैं अपनी टीम के डॉक्टर से बात कर रहा था। तभी कुमार संगकारा ने इशारा किया और हमें पता चला कि अब टूनार्मेंट आगे नहीं बढ़ पाएगा। इसके बाद का से ही अफरातफरी मच गयी थी इंग्लैंड के खिलाड़ी विशेषरूप से घबराये हुए थे क्योंकि उन्हें इंग्लैंड में होटलों में अलग थलग रहने की जरूरत थी और जाहिर था कि उनके पास कमरे नहीं थे।

आस्ट्रेलियाई एंड्रयू टाइ की जगह चुने गये गेराल्ड कोएट्जी पिछले सप्ताह ही भारत पहुंचे थे और मौरिस ने कहा कि वह इस युवा तेज गेंदबाज को समझा रहे थे क्योंकि वह सबसे ज्यादा डरा हुआ था।

आईपीएल में कोई खतरा नहीं लग रहा था : स्मिथ

जोहानिसबर्ग। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) के क्रिकेट निदेशक ग्रीम स्मिथ ने कहा है कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में भाग लेने के दौरान उनके खिलाड़ियों को बायो बबल (जैव सुरक्षा घेरे) में किसी भी प्रकार का खतरा नहीं लगा। बायो बबल में कुछ खिलाड़ियों और अन्य लोगों के संक्रमित पाये जाने के बाद आईपीएल निलंबित कर दिया गया था। उसी के बाद सभी दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी स्वदेश रवाना हो गये थे। स्मिथ ने कहा, हम किसी भी तरह से बायो बबल को लेकर कोई फैसला नहीं सुना सकते हैं। खिलाड़ियों से बात की, वे वहां सुरक्षित महसूस कर रहे थे। उनका कहना था कि भारत में जैव सुरक्षित वातावरण का अनुभव वास्तव में बहुत अच्छा रहा। वे किसी भी समय खतरे का अनुभव नहीं कर रहे थे हालांकि कोविड का कुछ कहा नहीं जा सकता। भारत में अभी प्रतिदिन चार लाख से अधिक मामले आ रहे हैं तथा हर दिन 4000 से अधिक लोगों की मौत हो रही है। स्मिथ ने कहा कि महामारी के दौरान जोखिम हमेशा बना रहता है और इसके लिए आयोजकों को दोष नहीं दिया जा सकता है। उन्होंने कहा, कई बार आप जो चाहते हो वह आप नहीं कर सकते हो। बायो बबल को कभी पूर्ण सुरक्षित नहीं कहा जा सकता है। जब आपके देश में कोविड का प्रकोप हो तो खतरा तो बना ही रहेगा। दुर्भाग्य से संक्रमण जब बायो बबल में घुसता है तो फिर क्या होगा यह कोई नहीं कह सकता। स्मिथ ने इस दौरान दक्षिण अफ्रीकी खिााड़ियों की सुरक्षित वापसी के लिये बीसीसीआई के प्रयासों की भी सराहना की। दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी शुक्रवार को स्वदेश लौट गये और अभी अपने घरों में पृथकवास पर हैं।